सोलो ट्रिप पर जाती सखी

स्वाति शर्मा

सोलो ट्रिप पर जाती सखी

कविता-संग्रह

स्वाति शर्मा की कविताओं में एक अनगढ़ ताज़गी है। वे प्रथम पाठ में विस्मित करती हैं, दूसरे पाठ में छूती हैं और तीसरे पाठ में उनके अनेक अर्थ खुलते हैं। हिंदी में इन दिनों बहुत बड़ी तादाद में कविताएँ लिखी जा रही हैं और इनमें बड़ा हिस्सा स्त्री कवियों द्वारा लिखी जा रही कविता का है। यह जितना संभावना से भरा परिदृश्य है, उतना ही जोख़िम से भी। एक जोख़िम दुहराव का है, दूसरा जोख़िम सरलीकरण की गिरफ़्त में आने का है और तीसरा जोख़िम नव्यता की कोशिश में अपनी अभिव्यक्ति को इतना जटिल बना लेने का है कि कविता अपनी संप्रेषणीयता खो बैठे। स्वाति शर्मा की कविताएँ लेकिन तमाम तरह के जोख़िम से अलग हैं। वे सहज भी हैं, संप्रेषणीय भी और दुहराव से दूर भी। इसकी दो वजहें दिखाई पड़ती हैं- एक तो संभवत: वे हिंदी की काव्य परंपरा से कुछ दूर खड़ी हैं और इसलिए उस रीतिबद्धता से मुक्त रह पाई हैं जिसकी वजह से बहुत सारी कविताएँ एक जैसी हो जाती हैं। दूसरी बात यह कि उनके पास परिप्रेक्ष्य की समझ और अवलोकन की एक अलग-सी सामर्थ्य है। वह अनुभव को उसकी पूरी सूक्ष्मता में पकड़ने की कोशिश करती हैं; एक-एक सांस को गिनती हुई- बताती हुई कि कब कौन-सी सांस ली जा रही है। इसी तरह वे समझती हैं कि मन के कई खाने हो सकते हैं। इसी समझ से वे लिख सकती हैं- 'दो मन होंगे मेरे शायद / पुराना मन सितारों ने बनाया होगा / और नया दूरबीनों ने / एक का साथ यायावरी / और दूसरे का आश्चर्य /.... दो मन होंगे मेरे शायद / बड़ा जंगलों ने बनाया होगा / और छोटा झुमकों ने...'। ऐसी विलक्षण कविताएँ और भी हैं।

स्त्री की कविता में स्त्री-कविता को खोजने और पढ़ने का मोह इन दिनों आलोचना की लगभग एक रूढ़ि बन गया है। इससे बचने की कोशिश करते हुए भी स्वाति शर्मा की कविताओं में एक स्त्री स्वर को अलक्षित करना लगभग असंभव है। यह एक आधुनिक स्त्री का स्वर है जो देश-दुनिया घूमती रही है, महानगरों की सड़कों को पहचानती रही है और कार की स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठकर भी दुनिया को इस निगाह से देखती रही है कि उसमें छुपी कविता को पहचान ले और रच ले।

कवयित्री के पास इस दुनिया के आईने में खुद को देखने और यह पूछने का सलीका भी है कि 'क्या हूँ मैं फरेब / या मैं वफ़ा हूँ / क्या हूँ मर्ज़ बिगड़ा / और उसकी दवा हूँ / क्या तुम्हारा सही / और तुम्हारा बुरा हूँ / मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ।'

अपनी सहजता में यह कविताएँ अपने को लगातार पढ़ते रहने को आमंत्रित करती हैं। पढ़ते-पढ़ते कहीं-कहीं संपादन की इच्छा भी जागती है- लेकिन वह भी इसलिए कि इन कविताओं में कुछ मूल्यवान और कुछ संवेदनशील तत्व मिलते हैं। प्रेम, संवेदना, करुणा, आत्मसजगता और अपनी पहचान की आकुलता- इन सामान्य से लगने वाले काव्य तत्वों के बीच स्वाति शर्मा बड़ी सहजता से आवाजाही करती हैं, उनमें एक नया भाव भरती हैं और कई बार उन्हें अतिक्रमित कर अपनी अलग ज़मीन भी बनाती हैं। 'सोलो ट्रिप पर जाती सखी' के इन विविध रूपों को देखना और पढ़ना सुखद है।

-प्रियदर्शन

पत्रकार/ कथाकार

सोलो ट्रिप पर जाती सखी

स्वाति शर्मा

भावना प्रकाशन

लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिक तौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश की फ़ोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुनः प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित न किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार हैं, जिनसे प्रकाशक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।

Solo Trip Par Jati Sakhi

by

Swati Sharma

I.S.B.N. : 978-81-8135-207-1

© स्वाति शर्मा

मूल्य : 250.00 रुपये

संस्करण : प्रथम, सन् 2023

प्रकाशक : भावना प्रकाशन
109-ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली-110091
दूरभाष : 8800139684

आवरण : साक्षी व्यास
शब्द संयोजक : पंकज ग्राफिक्स, दिल्ली-110092
मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली।

Published by : Bhavna Prakashan,
109-A , Patparganj Village, Delhi-110091, INDIA
E-mail : bhavnaprakashan@gmail.com

माता-पिता शारदा और देवेंद्र कुमार शर्मा
को समर्पित

स्वाति शर्मा की कविताएँ

स्वाति शर्मा को मैं कम जानता हूँ और जितना भी जानता हूँ उनकी कविताओं के माध्यम से जानता हूँ। उनकी कविताओं में जरूर कोई ऐसी बात है जो आकृष्ट करती है। इधर एक से बढ़कर एक कवयित्रियों ने अपने समृद्ध अनुभव संसार, मानवीय संवेदना, और काव्य भाषा से स्त्री कविता को लोकप्रिय बनाया है। स्वाति शर्मा इस इलाके में नयी हैं और ऐसा लगता है कि उन्होंने भी अपना मुहावरा संभवतः खोज लिया है।

स्वाति शर्मा की स्त्री अपने आप में स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, दुस्साहसी और स्त्री अधिकारों और अस्मिता के लिए बेचैन दिखाई देती है। यह एक ऐसी बौद्धिक स्त्री है जो अपनी सखी को नए अनुभव करने, नयी चुनौतियों का सामना करने, प्रकृति और पर्यावरण का अनुभव करने, लोगों से मिलने, और रोती औरतों के दुःख में शामिल होने की प्रेरणा तो देती ही है, उन्हें खुद दोस्ताना टिप्स भी देती है, क्यूंकि पुरुष प्रधान समाज में आज मोटरसाइकिल पर सवार शोहदे प्रायः एक अकेली लड़की के पीछे पड़ जाते हैं।

आज एक लड़की का टूरिस्ट या ट्रैवलर बनना आसान नहीं है इसलिए नसीहतें भी हैं तो अनुभव संसार को समृद्ध करने की अपार संभावनाएँ भी हैं। स्त्रियाँ प्रायः ही अपने परिवारों की छत्र-छाया में ही पर्यटन के लिए निकलती हैं। यहाँ कवयित्री अकेली स्त्री को पर्यटन नहीं बल्कि सुदूर प्रकृति से टकराने, उसकी छटाओं और उसके वैभव को देखने के लिए प्रेरित कर रही है। विदेशों में तो फिर भी स्त्रियाँ अनजान प्रदेशों और जगहों में आती-जाती हैं, मगर हमारे यहाँ ऐसे अमोद स्थल स्त्रियों के लिए आज भी वर्जित हैं।

स्वाति शर्मा ने प्रेम या विवाह न करने वाली लड़कियों के बारे में भी एक

कविता लिखी है। कवयित्री उनके लिए शहर के कैफ़ेज में अकेले लोगों के लिए सम्माजनक और सुविधापूर्ण जगहों की मांग करती है। वे चाहती हैं कि स्त्री ही सिर्फ़ अपने को अस्सर्ट न करे, समाज भी उनकी भावनाओं को समझे। स्त्री भी समाज में एक आम नागरिक को मिले अधिकारों के साथ जी सके, ये जितना मानवीय समता का प्रश्न है, उतना ही मानवाधिकार का प्रश्न भी है।

स्वाति शर्मा के काव्य संसार में जिस तरह से प्रकृति आती है, उसी तरह सूर्योदय, सूर्यास्त, मेघाच्छादित आकाश, ब्रंहाण्ड और सामानांतर ब्रंहाण्ड भी आते हैं। उनकी कविता में पेड़, पौधे, फूल-पत्ते, सागर-महासागर, तारे और नक्षत्र, पहाड़ और लोग भी आते हैं। हम सब इन सबसे मिलकर ही तो बने हैं और स्वयं कवयित्री भी। एक कविता में वह कहतीं हैं कि-

दो मन होंगे मेरे शायद
पुराना मन सितारों ने बनाया होगा
और नया दूरबीनों ने
एक का साथ यायावरी
और दूसरे का आश्चर्य
दूर होने और दूर रहने के अनुभव दो हैं
दूरियाँ ही ठीक से समझ आतीं हैं

कह सकते हैं कि 'यायावरी और आश्चर्य' कवयित्री के दो जीवन-मंत्र हैं। ये दोनों उनकी कविता के डी.एन.ए में कहीं न कहीं शामिल हैं। इनसे वह परिचालित होती हैं।

अंतिम बात उनकी भाषा के बारे में जो भारत के एक महानगर में एक ऐसी पढ़ी-लिखी लड़की की भाषा है जो अंग्रेजी से प्रभावित लगती है। इस भाषा को हिंदी का संस्कार देना उनका लक्ष्य होना चाहिए।

-मधुसूदन आनंद
संपादक/कथाकार

किस बिंदु से मिलेंगे आप?

शताब्दी की परत के दोनों तरफ़ का जीवन जहाँ लोगों की समझ 'बूमर', 'मिलेनियल', 'जेन ज़ी' और 'जेन एल्फ़ा' जैसे वर्गों में उप श्रेणित होने से बनती-बिगड़ती हो और सांस लेने के लिए भी न रुकने वाला आधुनिकीकरण सहज ही एक पहचान के संकट को जन्म देता हो, वहाँ आत्म की खोज समकालीन कविता के द्वारा करने को एक आंदोलन के जैसे देखना सही से बहुत दूर नहीं होगा। किसी व्यक्ति या विषय वस्तु की पहचान ज़्यादातर दो कारकों से की जाती है- पहला सिद्धांत और दूसरा इतिहास। ये दोनों उतने ही ठोस हैं, जितने कि अमूर्त। संस्कार से न सही तो मनुष्य अनुभवों से अपना एक संसार गढ़ता है, जिसके क़ानून और सिद्धांत होते हैं और इन्हीं को प्राणाधार बनाकर वह जीवन का स्वरूप देखता है। मानव की आस्तिकता हमेशा किसी न किसी विचारधारा, व्यक्तित्व, संगठन, प्रकृति या स्वभाव में होती ही है। सदस्यता एक बेहद आंतरिक मूलभूत ज़रूरत है, जिसे पूरा करने के लिए वह निजी नीतियाँ चुनता है। इसमें सहायक होता है उसका व्यक्तिगत और सामाजिक इतिहास। जब पृष्ठभूमि के फ़्रेम से सदैव के लिए बंधा मनुष्य अपनी समझ के बाहर प्रभावों को खुद के द्वारा सजीव होते हुए देखता है तब मनोविश्लेषणात्मक स्पर्श रेखा की जांच में निकलता है।

ये सब करते हुए जब जीवन के असल में एक निरर्थक शून्य और अब्सर्ड अस्तित्व के अलावा कुछ नहीं होने का पर्दा उस पर खुलता है तो उसका रुझान होता है साहित्य की ओर। कविता तब एक विलास का

साधन न हो कर अनिवार्य पदार्थ बन जाती है। शोध का विषय, बोध का कारण, विद्रोह का जरिया, संवेदनशीलता की भूमि, ये सब समकालीन कविता का ध्येय और उसके लक्षण बन जाते हैं। समकालीन कविता को दरअसल आंदोलन और कमजोर तबकों की ज़बान के रूप में जाना और समझा जाता है। जब कविता परंपरागत नियमावली को तोड़कर अपने रचे शाही गलियारों से बाहर आती है और नए समय को नए तरीके से दिखाती है तो समकालीन विचार का प्रारम्भ होता है।

तो एक आधुनिक समय में लिखे गए कविता संग्रह को क्या समकालीन दृष्टि से देखा जाये या समसामयिक समझ से टटोला जाये? ये कविताएँ आज के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दौर में स्वयं की और स्वयं से उसके परिवेश के सम्बन्ध की खोज करने की एक कोशिश हैं जो हर कालखंड में मनुष्य द्वारा की गयी। जहाँ एक तरफ वैश्विक आपदाओं और दुनिया भर में पसरा ख़राबा व्यक्तिगत अंतर्भाग के स्तर को जानने से समझा और सुलझाया जा सकता है, वहीं नजदीक से देखने पर वही केंद्र खोखला दीखता है। तो आत्म एक भ्रान्ति भर हो सकता है या हद से हद एक निरंतर निर्मित होता हुआ विचार, जहाँ सब एक प्रेज़न्ट कंटीन्यूअस है। इस हिसाब से ये कविताएँ पुराने साहित्य की समकालीन हो सकती हैं। वहीं अगर इन कविताओं को आंदोलन पैदा करने वाली दृष्टि से देखा जाये तो ये एक सतत ज़ाती संघर्ष का चित्रण भी करती हैं। हर जगह दखल रखने वाला सोशल मीडिया, महामारी, घोर पर्यावरण संकट, विवैश्विकरण के समय में कविता लिखना अपनी सबसे प्रिय, सबसे ज़्यादा सहेजकर रखी हुई भेद्यता को सार्वजनिक करने जैसा है। एकाधिक यथार्थों से उलझना आधुनिक कविता का एक अपरिहार्य गुण हो जाता है तो लेखन खुद- ब-खुद आंदोलन हो जाता है जो इन कविताओं को समकालीन बना देता है।

कोई भी लेखन अपने समय से अछूता नहीं रह सकता। एक बूर्ज़ुआ लोकतंत्र का हिस्सा होते हुए जीवन में घने विरोधाभास और उसे संचालित करती हिपोक्रिसी या पाखंड की प्रजा और विषय वस्तु होते हुए विद्रोह और आंदोलन की जरूरत चाहे एक सी होगी परन्तु बालकनी

से नीचे देखने और घाटी से पहाड़ की चोटियों को देखने का नज़रिया हमेशा ज़ाती ही रहेगा। लम्बे अरसे में एकत्रित हुई ये कविताएँ इसीलिए अपना खरापन हमेशा साथ रखती हैं। लेकिन ये कोशिश रही है, ये कहीं भी भटके नहीं कि ये इकलौते यथार्थ का लेखन है। बल्कि एक उत्तराधुनिक जीवन को निरंतर मिलने वाले विरोधाभासी कार्यप्रेरकों को लिपिबद्ध करने के साथ आश्चर्य और प्रश्न करना इन कविताओं के केंद्र में है।

लेखन सदैव एकाकीपन का काम रहा पर ये परिणाम साहित्य के सान्निध्य, अध्यापकों के साझा किये ज्ञान, भाषाओं के उस्तादों की शिक्षा, मित्रों के साथ किये तर्क-वितर्क, सहकर्मियों के साथ किये संवाद का है। अंकुर, मेरे अध्ययन के चयन का आलोचक रहा और अनूठा साहित्य भेंट किया।

रॉबिन ने सबसे पहली रचनायें पढ़ीं और प्रोत्साहित किया। विक्रम ने शास्त्रीय साहित्य और सिनेमा पर ढेर सारी चर्चा की। सुरेश पांजे ने पत्रकारिता लेखन के शुरुआती टिप्स सिखाये। मनीषा, शिप्रा, आरती ने सभी उपलब्धियों का जश्न मनाया और सभी विफलताओं में साथ निभाया। तेजस ने कला तर्क और समीक्षात्मक स्तर पर मेरे लेखन को शह दी। प्रियंका ने नृत्य के माध्यम से इन कविताओं का संचलन में अनुवाद किया। ग़ज़ल की महफिलों, कविता गोष्ठियों और यात्राओं पर मिले कवियों से बहुत प्रेरणा मिली। एकांत को अगर एक लक्ज़री के तौर पर देखा जाये तो इन कविताओं के लिए समाज और एकाकीपन के बीच का पुल इन सब कन्धों पर बना है। इसलिए इन कविताओं के चिंतन को एक जीवन के कोलाज का रूप भी कहा जा सकता है।

उन सब कवियों का बहुत धन्यवाद जिन्होंने विभिन्न आयोजनों में मेरी ग़ज़लें और कविताएँ सुनी और पसंद कीं। सुधांशु जी के साथ मेंटर-रुपी चर्चाओं ने इस किताब को समृद्ध किया। उन सभी सम्पादकों का धन्यवाद जिन्होंने मेरी कविताओं में संभावनाएँ देखीं और अपने प्रकाशन में जगह दी। बलराम जी के प्रोत्साहन के लिए धन्यवाद। आप जानते हैं कि आप सब कौन हैं और देखिये, आपकी सहज शिक्षा और सान्निध्य इन कविताओं को कहाँ तक ले आए! आपकी समझ, सुझाव

और आलोचना के बिना ये संकलन अस्तित्व में नहीं आ सकता था।

ये आधुनिक पटल पर आंतरिक अन्वेषण करती, नए जमाने की नयी समस्याओं का हल नए विचारों में ढूंढती, अपने परिप्रेक्ष्य और उसकी समझ को निरंतर फैलाती, ज़ाती विमर्श दर्ज़ करती, परंपरागत की जानकारी सहित परंपरागत से अलहदा बात कहती, और अविरल अन्वेषण के धरातल पर रहती ये कविताएँ किस श्रेणी में आती हैं, ये निर्णय आपका होगा। और इन्हें विचार और चिंतन केंद्रित साहित्य में जगह मिलेगी या नहीं, ये समीक्षक बताएँगे। मैं तो ये कह सकती हूँ कि ये अनुभूतियों का ईमानदार अभिलेख हैं जो सम्बंधों, यात्राओं, व्यापार, आत्ममंथन, साहित्य और काव्य कला के प्रति श्रद्धा से आया है। इनमें अभिव्यक्त आश्चर्य, सवाल, सम्भ्रान्ति, और अनुभूति, बहुत सारी बातें, बहुत सारे मौन, और बहुत सारी सैर करने का नतीजा है। तो क्या आप चलेंगे मेरे साथ इस लम्बी, घुमावदार यात्रा पर?

-स्वाति शर्मा

सोलो ट्रिप पर जाती सखी

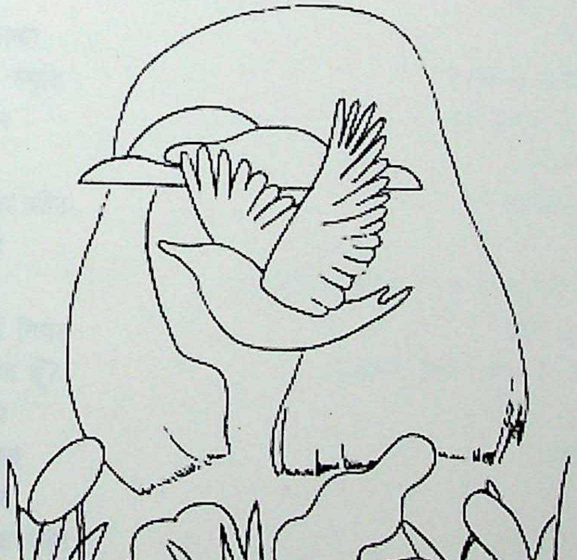

अनुक्रम

स्वाति शर्मा की कविताएँ 07
किस बिंदु से मिलेंगे आप? 09

अक्षर 19
दो मन 21
स्टिकी नोट्स 23
साँस 24
धुँधलका 26
भाषा स्मृति 27
ज़बान 28
ब्रेक 29
पैसेंजर सीट 30
स्पीड 31
हाईवे 32
रिवर्स गियर 33
मैं क्या हूँ? 34
प्रारम्भ 37
चन्द्रास्त 38
नवंबर 41
ट्रैफ़िक जाम 42
धूप 43
सिनेमाघर 44
मैंने सुना है 46

अधूरे चाँद-सा 48
शान्ति 51
झुमके 53
गढ़वाल 56
विकास की कॉफ़ी 58
जनवरी की आदत 59
बारिश 60
आज-कल 62
तुम्हारा आना 64
हम 66
तुम्हारे नाम 67
घर 68
सच 70
अपंग 72
बसंत के सूर्यास्त 74
कलरब्लाइंड 75
दलीलें 76
समानांतर ब्रम्हाण्ड 77
तुम्हारी वाली चाय 79
एरर 404 81
थोड़ा अर्जेंट है 83
ज़िद 85
प्रेम, विवाह न करने वाली लड़कियाँ 86
पहाड़ी खेल 88
सोलो ट्रिप पर जाती सखी 92
लिस्ट 95
कम्प्रेशन 96
प्रेम 98
जीवन धनुष 101
विरह 103
पुल 104
प्रतिकार 105

अंधापन	107
गुच्छा सा	108
गुज़रे बरस	109
हार	110
आधी सिगरेट	113
बामानी साल	114
अतुकान्त	115
साढ़े छह	116
समयवाद	117
यादें	119
देवदार	120
आधे रास्ते	121
आज	123
शामों की पीड़ा	125
ओरिगामी	126
सफ़ेद कमीज़	127
सफाई	129
जब जब	131
खब्बा हाथ	132
अ वेंज़्डे	133
श्वास निधि	134
दिवेआगार	135
रोटी और कविता	137
धुआँ	139
पुराने जूते	141
जा-ए-मन	143
कवि	147
बातें	148
मुकरियाँ	150

अक्षर

बचपन में सीखा था
बिंदु से बिंदु जोड़
आखर गढ़ना
तस्वीर भरना
तब से बस वही एक तरीका
सीखा है जीवन में
कितने बिंदुओं से बिंदु जोड़े हैं
कुछ बना लेने की आस में
कई लकीरें बनाई हैं
हाशिए की तलाश में
किस बिंदु से आना है
किस बिंदु पर जाना है
बस कोई हाथ थामे नहीं बताता
कुछ बिंदु समय हैं
कुछ रंग हैं
तो कुछ पन्ने और स्याही
कुछ बिंदु भावनाओं जैसे
दीख पड़ते हैं
कुछ छूने से चीख़ पड़ते हैं
कई सारे सील किये हुए लिफ़ाफ़े हैं
कुछ नये हैं तो कुछ पुराने

क्या ये सब बिंदु मैं हूँ?
क्या मैं इन सब में हूँ?
या मैं वो हूँ
जो दूर लकीरें बना रहा है?
जो इस कभी न बनने वाले शब्द को
गढ़ रहा है?
मैं जानती हूँ
आप मुझसे मिलना चाहते हैं
कहिये किस बिंदु से मिलेंगे आप?

दो मन

दो मन होंगे मेरे शायद
एक मन पीली स्ट्रीट लाइट्स ने बनाया होगा
और एक मन बालकनियों ने
एक के ऊपर रहकर देखने से
और एक के नीचे रहकर देखने से
सब कुछ उलझ जाता है
उलझनें दिलक़श चीजें होतीं हैं

दो मन होंगे मेरे शायद
पुराना मन सितारों ने बनाया होगा
और नया दूरबीनों ने
एक का साथ यायावरी
और दूसरे का आश्चर्य
दूर होने और दूर रहने के अनुभव दो हैं
दूरियाँ ही ठीक से समझ आती हैं

दो मन होंगे मेरे शायद
बड़ा जंगलों ने बनाया होगा
और छोटा झुमकों ने
एक को ओढ़ लेने से
और एक को पहन लेने से

शृंगार की एकरसता घनी हो जाती है
कुछ न बूझने पर सजावट ही ठौर होती है

दो मन होंगे मेरे शायद
ऊपर वाला गौरैया ने बनाया होगा
और नीचे वाला नृत्य ने
एक उड़कर स्थिर होने को चाहता है
दूसरा गति की स्थिरता का संचारण करता है
द्रवित होना
फिसलना, उठना, और फिर फिसलना होता है
परिवर्तन की लय एक नियंत्रित चाल है

दो मन होंगे मेरे शायद
पास वाला खिड़कियों ने बनाया होगा
और दूर वाला सैरों ने
एक से सब कुछ समेट लेने की कोशिश
एक में सब कुछ बिखेर देने की क़वायद
साधनों की जमाख़ोरी है
वक़्त के टालने को सारे पुर्ज़े चाहिए

स्टिकी नोट्स

अबकी बार
सारी आख़िरी बारें
बिन तारीख़ सारी अख़बारें
मेरे कोने की दो दीवारें
उन पर पक्की होती नई दरारें
जहाँ दिन की आख़िरी रौशनी
गिरती है औंधे मुँह
और हाथ पसारे
उन पर
टाँग दी गई हैं

रंग-बिरंगे कागज़ के पुर्ज़ों से सना
ढलते सूरज का स्थायी पटल
स्मृतियाँ सुकून नहीं होतीं
और न ही ताक़ीद बनती हैं
वे सिर्फ़ स्मारक होतीं हैं
उन पलों का
जब हम जिए थे

साँस

सिर्फ़ साँस
एक, दो, तीन, चार
कॉफ़ी का बड़ा कप
सामने रखकर खींची गयी
सुबह बिस्तर में
फ़ालतू दस मिनट मिलने पर ली गयी
कहानी पढ़ लेने के बाद
उसके अंत में
झांकते हुए छोड़ी गयी

रात भर सिरहाने पड़े गिलास सी
मैं रोक दी गयी हूँ
और साँसें सिर्फ़ रुककर ही
गिनी जाती हैं
गणित जमा दर्शन
बराबर निल
एक, दो, तीन, चार

सिर्फ़ साँस
प्रयत्न का कोई शोर नहीं
एक, दो, तीन, चार

अगर ये शाश्वत गिनती
संतुष्टि नहीं दे सकती
तो और कुछ संतुष्ट नहीं करेगा

पर स्वतंत्रता के पुजारी हम
संतुष्टि से
एक, दो, तीन, चार
चार कदम दूर ही रहते हैं

हम क्या चुनना चाहते हैं
गिनती या शब्द
स्वतंत्रता या संतुष्टि
शोर या साँस
अनंत या अनादि
एक अहम वरण
या सिर्फ़ आवरण

धुँधलका

रोज़मर्रा के कोने मोड़ कर
सफ़हा सत्तरह का
एक व्यक्तिगत बोध बना लिया है
इस शहर की आकाश गंगा देखने लायक़
अँधेरा जगा कर
जीवन के आधार मठों की
बत्तियां बुझा दीं हैं
सड़क के किनारे लगी
शहतूत के पेड़ों की कतार में
समाधिस्थ
मन की आँखों को मसलकर
खोलने के प्रयत्न में
दूर की नज़र में फ़र्क़ आ गया है
अब कैसे निर्धारित होगा
कि धर्म धुंधला हुआ है
या प्रेम

भाषा स्मृति

केवल भाषा से रेखांकित होने वाली आत्मा
की तस्वीर कैसे बनेगी
अतिशय अक्षय वेदना
की भोर में
अधर में रुकते बोल
कैसे पहुँचेंगे ज़बान की धार तक
पूनम के चाँद पर खुली खिड़की
स्मृति के स्वरूप का अनुवाद
कैसे उतार सकेगी
निपोर कर रह जाएँगी
टाइप करती उँगलियाँ
फिर आधे कच्चे वाक्यों
का ज़िम्मा कौन लेगा
जब क़िस्से, जगहें या चीजें
न बनती हों याद का कारण
पर ठिठक जाते हों शब्द
क्यूँकि उन पर लगी हो एक आवाज़
उस बची-खुची शब्दावली
का क्या मान होगा
इस भाषा की क्षति
की भरपायी कैसे होगी!

ज़बान

छह ज़बानें
छह ज़बान चलाने के तरीक़े
छह सौ ज़बान सम्भालने के ढंग
छह हज़ार साँस लेने के प्रकार
छत्तीस हज़ार साँस रोकने की क़वायदें
हज़ारों लेखकों का सान्निध्य
अनगिनत बातें
और फिर भी
सबसे सुंदर भाषा-शरीर
शुद्ध, शाश्वत, निर्दोष

ब्रेक

जिस दिन बारिश हो
तुम्हारे पास उस दिन आना चाहती हूँ
ठंडक में बातें ग़र्म होती हैं
नए ब्रेक पैड्स लगवाए हैं
फिसलन वाली सड़कों के लिए
ये मन के ब्रेक पैड्स कहाँ मिलते हैं
तुम्हारे सामने फिसलते मन को
तार्किक रखने के लिए
बार-बार ब्रेक लगानी होगी

पैसेंजर सीट

रंग-बिरंगी गढ़ी हुई पेन्सिलों का
गुलदस्ता बना कर
गाड़ी की पिछली सीट पर रखा है
तुमसे मिलने की आस
स्टेशनरी शॉपिंग जितना आनंद देती है
जाने रोकने की कोशिश कौन करेगा
तभी सारे ओरिगामी क़ागज़
आगे पैसेंजर सीट पर रखे हैं
वापस आते हुए गाड़ी की खिड़की से
क़ागज़ के जहाज़ उड़ाने होंगे

स्पीड

ऐक्सिलरेटर्स पैरों के लिए नहीं
मन के लिए बने हैं
एक बंधी हुई स्पीड के सफ़र में
स्पीडोमीटर की सुई पर मैंने
सारा बोझ डाल दिया हो जैसे
इंजन का स्पंदन मुझमें रच रहा है
तुमसे पहले मिलने की रेस में
गाड़ी और मैं एक हो रहे हैं
पता नहीं पूरी रात ड्राइव करने के बाद भी
तुम तक पहुँचूंगी या नहीं

हाईवे

अभी उलटी दिशा में जाती सड़क
और गाड़ी की घड़ी देखी
ख़ालीपन में धम्म से एक पत्थर गिरा
और कोई आवाज़ बाहर नहीं आई
स्टीयरिंग पर पकड़ फिसलती गई
अच्छा तो ये होता है सन्नाटा बटे शून्य
तुम्हारे पास से वापस आते हुए
उस तरफ़ के हाईवे से देखना होगा
कल का सूर्यास्त

रिवर्स गियर

बेतरतीब पार्क की हुई गाड़ियों के बीच
जान कर तंग जगह में गाड़ी लगायी है
तुम्हारे पार्किंग स्पेस से कल निकलते हुए
मुझे दिक़्क़त होनी चाहिए
सारा ध्यान सिर्फ़ गाड़ी काटने पर हो
तुम्हारी विदा करती हुई आँखों पर नहीं
रिवर्स गियर और अलविदा
मुझे दोनों ही ठीक से निभाने नहीं आते

मैं क्या हूँ?

कोई तो बता दे,
कोई तो दिखा दे,
जो देखूं मैं ख़ुद को
तो ख़ुद से रिहा हूँ
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ?

क्या हूँ लौ मैं जलती,
या बहती हवा हूँ,
या हूँ पानी उजला,
या गहरा धुआँ हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ?

क्या हूँ मैं फ़रेब,
या मैं वफ़ा हूँ,
क्या हूँ मर्ज़ बिगड़ा,
और उसकी दवा हूँ,
क्या तुम्हारा सही
और तुम्हारा बुरा हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ?

क्या हूँ बस मैं मिट्टी,
या इलाही शफ़ा हूँ,
जो इस पल मौजूद
दूजे में फ़ना हूँ,
क्या हूँ मैं हमेशा,
या बस इक दफ़ा हूँ,
क्या हूँ मैं अमल इक
या बस इक दग़ा हूँ,
यहाँ की हूँ ख़ुशबू,
या कोई फिज़ा हूँ,
क्या हूँ इस जगह मैं
या मैं उस जगह हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ?

क्या रोज़े में निकली
मुल्ला की दुआ हूँ,
क्या ख़ुमारी में झूमे
मर्दाने की वाह हूँ,
क्या हूँ कोई चुप्पी,
या दर्द-ए-रूह का बयां हूँ,
क्या हूँ जख़्म गहरा,
या छोटी सी आह हूँ,
क्या हूँ कोई मकसद,
या यूँ ही यहाँ हूँ,
क्या आवाज़ हूँ मुमकिन,

या बस इक जिरह हूँ,
क्या फेहरिस्त हूँ झूठी,

या सच्ची मैं चाह हूँ,
क्या हूँ बस मैं फ़ाया,
या यहाँ से वहाँ हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ,
मैं क्या हूँ, मैं क्या हूँ?

प्रारम्भ

प्रलय चाहिये,
तांडव चाहिये,
होम चाहिये,
नव गीता प्रवाह
और गांडीव की टंकार चाहिये,
दर्जनों का गर्जन चाहिये,
विष-अमृत मन्थन चाहिये,
सर्वनाशी ज्वाला एक प्रचण्ड चाहिये,
चेतन प्रतिक्रिया की
ध्वस्तता की पुकार चाहिये,
पंचजन्य का घोषण,
स्थितप्रज्ञता की ललकार चाहिये,
सर्व-व्यापी संहार चाहिये,
आहार चाहिये, प्रारम्भ को
आहार चाहिये...

चन्द्रास्त

बचा हुआ गुंथा आटा
गीले हाथों से थपथपाया
तुलसी के पत्तों से लिप्त
पानी, दूध, पका हुआ खाना
और हर गीली चीज़
पवित्र पत्तों से तर
बड़ी लगन से बने
कोने में खिड़की के पास
संभाल कर रखे
चार सफ़ेद चावल के पिरामिड

आज रसोई
पुरातन शास्त्रों
और अंतरिक्ष में
प्रकट होने वाले
ब्रम्हाण्डीय ड्रामा
का प्रतिबिम्ब बनी है

पापा का रास्ता देखती माँ
जो इन हथेली से बनाये
चार पिरामिडों के साथी
चार पैकेट दूध

बाज़ार से लाने गए हैं
इन चार जोड़ों को
कल सुबह
चार सीधे हाथ
अभागों के लिए दान बना
मणस देंगे
आज चावल नहीं मिलेंगे
जल्दी बने रात के खाने में

माँ इंतज़ार करती है
और लेट जाती है
अपनी कृष्ण और शुक्ल पक्ष होती
खांसी को छिपाती हुई
रात की नीली रौशनी के नीचे
गोद में पुरातन गीतों की
किताब लिए
मैं चुपचाप पहुँच चुकी हूँ
प्रशांत महासागर के किनारों पर
एक समुद्र तट की बालकनी में
सिर्फ़ एक पानी की बोतल संग
मेरे सिर पर उमड़ रहे स्याह बादलों
के साये छिपाने में बितायी
अकेली रात

अगर तुमने कभी देखा होगा
धीरे-धीरे डूबता हुआ
ग्रहणोत्तर चन्द्रमा
सिर्फ़ एक पानी की बोतल के साथ
तो तुम जान पाओगे
कि मेरे पास क्यों नहीं है

उसकी कोई भी फ़ोटो

बुज़ुर्ग नानी दादी कहतीं थीं
चंद्र ग्रहण रखते हैं कठोर लहजा
सांस और दिमाग़ की
विकृति वालों के प्रति
इसीलिए ग्रहण में
दुःख झेलते हैं
संवेदनशील और रचनात्मक प्राणी

पर इस सर्वव्यापी प्रेत की
प्रतिच्छाया को
व्यावहारिक गृहस्थ ग्रहण की
प्रतिछाया में छिपाकर रखना
मेरे कुटुंब की महिला पीढ़ी
की वांशिक सुपरपावर है
जैसे सबसे ख़ूबसूरत जवाहरों के
अमंगल को ढांप कर रखा जाता है

आज की रात
रचनाकार और रोगी
भय भक्ति में झुके रहेंगे
उत्तर जीविता का उपवास करते हुए
ख़ुद को एक छाया आकृति
से बचाने के लिए
और वहीं एक चन्द्रोन्मादी की रुग्णता
पीछा करने की पीढ़ा में
छत की सीढ़ियाँ चढ़ेगी
अपने पागलपन से हार मान कर
एक नयी चाँद्र दन्तकथा लिखने को

नवंबर

जब सारे बैंक खाते भर जाएँगे
और सभी बाज़ार हो जाएँगे ख़ाली
जब सारा धुआँ हम पी जाएँगे
जब आख़िरी मधुमक्खी मर जाएगी
और सारे मौसम मुँह मोड़ लेंगे
जब मिट्टी, नदियाँ, हवाएँ होंगी द्वेषपूर्ण
नवम्बर तब भी सबसे खूबसूरत रहेगा
नितांत अकेला
मानवता से मुक्त
यह एक पेगन मन की कामना है

ट्रैफ़िक जाम

शामें
जो आधी ब्रेक लाइट्स
और आधी स्ट्रीट लाइट्स
में बंट जाती हैं

रातें
जो ख़्वाबों के ट्रैफ़िक जाम में
हैंड ब्रेक लगाए
एक ही जगह फुदकती रहती हैं

सड़कें
जो रैड लाइट्स के
मनके फेरती रहती हैं

बड़े शहर के जाम में
घर पहुँचना
टीस को टालने सा होता है
जाम जिससे हर शाम छुट्टी मिलती है
पर मुक्ति नहीं

धूप

नॉस्टैलजिया हमेशा चला आता है
कॉफ़ी की ख़ुशबू में
कैफ़े के शोर में
पुरानी मेज़ में
जैज़ पियानो में
धुँध की परछाइयों में
पीली स्ट्रीट लाइट में
फुटपाथ की टाइलों की गिनती में
पर कभी कभी
नॉस्टैलजिया आता है
धूप में
खुली बिखरी धूप,
आँखों का रंग भूरा कर देने वाली धूप,
भूरी आँखों से कुछ भी न दिखाई देने वाली धूप

ट्रैफ़िक जाम

शामें
जो आधी ब्रेक लाइट्स
और आधी स्ट्रीट लाइट्स
में बंट जाती हैं

रातें
जो ख़्वाबों के ट्रैफ़िक जाम में
हैंड ब्रेक लगाए
एक ही जगह फुदकती रहती हैं

सड़कें
जो रैड लाइट्स के
मनके फेरती रहती हैं

बड़े शहर के जाम में
घर पहुँचना
टीस को टालने सा होता है
जाम जिससे हर शाम छुट्टी मिलती है
पर मुक्ति नहीं

धूप

नॉस्टैलजिया हमेशा चला आता है
कॉफ़ी की ख़ुशबू में
कैफ़े के शोर में
पुरानी मेज़ में
जैज़ पियानो में
धुँध की परछाइयों में
पीली स्ट्रीट लाइट में
फुटपाथ की टाइलों की गिनती में
पर कभी कभी
नॉस्टैलजिया आता है
धूप में
खुली बिखरी धूप,
आँखों का रंग भूरा कर देने वाली धूप,
भूरी आँखों से कुछ भी न दिखाई देने वाली धूप

सिनेमाघर

सिनेमाघरों के बाहर
होनी चाहिए
बोगनविलिआ के सभी रंगों की बेलें
सफ़ेद, गुलाबी, संतरी
मधुमती से दीवारें
सनी होनी चाहिए
और होने चाहिए
मक़बरों के बाहर लगने वाले
बूढ़े शहतूत के दरख़्त

थियेटरों के बाहर
खच्च-छप्प करते गिरते
सेमल के फूलों से
ज़मीन रंगी होनी चाहिए

और पार्किंग के बाहर
हरे चने छीलता बेचता
आदमी बैठा होना चाहिए

बॉक्स ऑफ़िस के बाहर
प्रेमी जोड़ों की लाइन

अलहदा होनी चाहिए
लॉबी की ज़मीन पर
गुदे होने चाहिए
नक्षत्रों के जटिल जाल

फ़िल्म शुरू होने से पहले
खड़ा कर हर एक हाथ में
थमा देने चाहिए
कॉम्प्लिमेंटरी पॉपकॉर्न के डिब्बे
और स्क्रीन पर शहर के
सभी पुराने नीम के पेड़ों की
तस्वीरें चलनी चाहिए

सिनेमाघरों के बाहर
मिलने चाहिए मुफ़्त शब्दकोश
होनी चाहिए सभी रोक देने की क़वायदें
सारे थाम लेने के सामान
पेट और मन भरने के सभी इंतज़ाम

थियेटरों और मक़बरों के बाहर
होनी चाहिए एक अदद
बैठ जाने की छाँव

मैंने सुना है

मैंने सुना है
बूँदों की कल-कल
और पत्तों की हलचल को
बारिश की रिमझिम
और तारों की टिम-टिम को
खनक तुम्हारी हँसी की
वहाँ नहीं है

मैंने देखा है
वीराने में ख़ामोशी को
मयख़ाने की मदहोशी को
कटती पतंगों को
और उड़ती उमंगों को
ठहराव तुम्हारी रूह का
बेवजह तलाशा है

मैंने जाना है
जान लेने वाली सर्दी को
जान लेने वाली गर्दी को
दोस्ती के हाथ को
अधूरे से साथ को

साँसों का तुम्हारी
वहाँ ज़िक्र भी नहीं है

पर मैंने जब-जब महसूस किया है
पर्वतों की ठंडी हवा के झोंकों को
नयी बर्फ़ के धोकों को
जंगल के विस्तार को
वो गिरना आख़िरी बार को
तुम्हें और पास पाया है
ख़्यालों में ठिकाना बनाया है

अधूरे चाँद-सा

आज दिल है
कुछ अधूरे नग़मे सुनने का
अधूरी बातें
अधूरे सपने
अधूरी यादें बुनने का

कुछ कहो जो
सुना न हो
हो अधमरा
पर फ़ना न हो

सिर्फ़ आधा ही
तुम्हें दिखा हो
जिसे आधी साँस से
तुमने लिखा हो

वो बात जो
अधर में रुक गई
वो नज़्म जो
क़लम में छुप गई

वो ख़्याल जो
लफ़्ज़ों को पीछे छोड़ गया
वो आँसू जो
तुम्हारी स्याही निचोड़ गया

वही क़िस्से जो
चुप रह न सके
वही हिस्से
पर तुम कह न सके

वो अक्षर जो
क़सक लिये बैठे हैं
वो अक्षर जो
न आने को ऐंठें हैं

वो मसले जो
अनसुलझे हो गए थे
वो रास्ते जहाँ
तुम खो गए थे

कहो उसे
जिसे दर्द के सिरे पे
तुम छोड़ आए थे
वो अटल विचार
जहाँ से पग मोड़ लाए थे

ज़रा पलटो उन वरकों को
जो राह तुम्हारी तकते हैं
और जानो ज़रा
क्या अधूरे वाक्य कर सकते हैं

वो सितारे हैं
तुम्हारी किताब के
वो टुकड़े हैं
आफ़ताब के

वही प्रतिबिंब
तुम्हारी कुण्ठा का
सबसे ऊँचा
सबसे सच्चा
सबसे पक्का था

बस, वही अनकहा एक
पूरा है
जो कह डाला
क्या जाने वो अधूरा है

शान्ति

ज़ोर के घूमते दरियाई भँवरों से
पिसते गोल-मटोल पत्थरों की गुड़-गुड़
झरनों का बौख़ला कर
चट्टानों पर टूटते हुए गुर्राना
रहट चक्की की जीवन सरीखी
अन्तहीन साँय-साँय

सताये या भूखे हैं ये पंछी
आसमानों से पुकार करते हुए
जब सूरज उगता है
ढोल बजाता चला आता है
जब शाम ढलती है
कपड़ों, पिंड, जान तक से लड़ती-झगड़ती
ओस की बूँदें मसल जाती है

मन कचोट देने वाली
देवदारों से छनती चीख़ती चाँदनी
भरभरा कर बिखर जाती है

तन पर रेंगती हुई
कीट-पतंगों की रीं-रीं

क़दमों की धमक से कराहता
लकड़ी का कमज़ोर सा बूढ़ा फ़र्श

बेइन्तहाँ आवाज़ों का रूहानी एकांत
और चौबारे से पैर लटका कर
ख़ाली कप हाथ में लिए बैठी मैं
क्या ढूँढ रही हूँ मैं यहाँ
अनंत के शोर-ओ-गुल में
अनंत की शान्ति

झुमके

ये कैसा सवाल है
अटपटा सा
कि तुम इयरिंग्स ख़रीदती ही क्यूँ हो
जब पहनती नहीं
मैं नहीं जानती
पर हर्ज़ नहीं है कोई भी
इकट्ठा कर-कर अंबार लगा लिया है
बालियाँ, झुमके, शैंडलीयर्स, मास्क्स
छोटे, बड़े, रंग-बिरंगे
सब तरह के कुंडल हैं

माँ पूछती हैं
दहेज में ले जाओगी क्या
लोहा-लंगड़ समेटती रहती हो
कभी-कभार हवा भी दे लिया करो इन्हें
कभी-कभार के लिए ही तो हैं
चुनने के लिए एक लम्बी कतार होनी चाहिए

सोना पहनूँ या चाँदी
चमकीला पत्थर या लोहा
मोती चुनूँ या पन्ना

ओह! वो नारियल के खोल से बने लटकन भी तो हैं
जूट और बैम्बू भी हैं
पर आज मूड मूँगे का है
वो जामुनी कटैला और स्फटिक भी बड़े ख़ूबसूरत हैं
ये वाले पहनूँ
जो वेनिस से लाकर भेंट दिए थे
नहीं ये वाले
जर्मनी के साइयन्स म्यूज़ियम से लिये थे
या ये वाले
जो फ़्लॉरिडा में देखते ही भा गए थे
और ये जो ऐरिज़ोना में
नॉवहो इंडीअन औरत ने
अपने हाथों से गूँथे हैं
ये काँच के नीले वाले
स्विट्जरलैंड में
मेरे सामने उस आर्टिस्ट ने बनाये थे
मुझ पर फबते भी हैं

लेकिन ये लिज़्बन से लिए
फ़ाडो गायिकाओं वाले तो जैसे शाही हैं
महंगे थे काफ़ी
दोबारा देखने जाने पर
दुकानदार ने कुछ छूट दे दी थी
कहीं झुमकों से रिसती
तुम्हारी याद कानों में लग गयी
फ़ाडो संगीत जैसी
कानों की बजाए आँखों में मोती पहने
मैंने डिब्बा बंद कर दिया

और उठते हुई बोली
इसलिए ख़रीदती हूँ
क्यूँकि ये मेरे लिए कलाकृतियाँ हैं
एक जीवित कहानी जो कभी पहन सकती हूँ
महज़ रोज़ का शृंगार नहीं
चलती हूँ

गढ़वाल

बादल का एक टुकड़ा
जब गिर जाता है पेड़ों पर
फँस जाता है टहनियों में
दिल के टूटने की
आवाज़ सुनायी देती है
मैं जहाँ चल रही होती हूँ
वहीं रुक जाती हूँ

जब हवा उसे झकझोर देती है
धकेल देती है वादी में
जब वो अकेला
गिरता उड़ता संभलता है
उसके परे एक तस्वीर गुम सी होती जाती है
मैं जहाँ रुकी होती हूँ
वहीं बैठ जाती हूँ

जब वो टूटकर बिखरने लगता है
बरस कर ख़त्म हो जाता है
मिट जाता है धुँधलका मिटाने को
और वादी को और हरा कर जाता है

मैं भी बरस कर ख़ाली हो जाती हूँ
फिर जहाँ बैठी होती हूँ
वहाँ से उठ खड़ी होती हूँ

तब सिर पर एक बूँद पड़ती है
और मन सिहर जाता है
जूतों के फ़ीते कस के
पलकें झपकाती हुई
मैं जहाँ खड़ी होती हूँ
वहाँ से चल देती हूँ...

विकास की कॉफ़ी

मैप पर ग़ैर-मौजूद
छोटे पहाड़ी गाँव में
शहर के प्रगतिशील लोगों ने
चार कैफ़ेज़ बांध लिए हैं
झरने के पानी में उबला पास्ता
इमाम-दस्ते में पिसी कॉफ़ी
देसी मुर्गी के अंडों वाला शाक्षुका
कुलथ दाल के स्प्राउट्स

कैफ़े के ऊपर से जाती
पगडंडी से बकरियों को
घर ले जाकर
बेटे की नीचे से आयी चिट्ठी
रसोई के डिब्बों के नीचे खोंसकर
गाय के लिए पानी भर कर
पहाड़ के पीछे छिपते वही
नारंगी सूरज और गुलाबी बादलों संग
राशन की चीनी वाली
तेज़ मीठी चाय सुड़कती हुई
अम्मा आज सोचती है कि
कॉफ़ी के रास्ते आया विकास
कड़वा होगा क्या!

जनवरी की आदत

पहली जनवरी को कुछ भी नहीं बदलता
पर बहुत कुछ अलग-सा हो जाता है
जिस तरह
कुछ टूट जाने पर भी
आप नए हो जाते हैं
पहली जनवरी को कभी नाउम्मीद नहीं सोना चाहिए
नाकाम, नाकारे, नाख़ुश, भले नाशुक्रे ही सो जाइए
नाउम्मीद नहीं
चाहे पहले महीने ग़लतियाँ काफ़ी हों
धीरे-धीरे आदत हो जाएगी
पिछले साल की जगह नया साल लिखने की

बारिश

काले बादलों की
सीढ़ी उतरकर
ठण्डी हवा की उँगली पकड़े
आयी ख़बर बारिश की

आवारा क़दम
मुड़े उस ओर
उड़ाई परिन्दों ने
बूँदें जिधर बारिश की

गीली सड़क पर
फिसलता मन
फिर संभाला मैंने
हुई फ़िक्र बारिश की

डर बस बूँदों का है
भर जाती हैं जहाँ-तहाँ
उन्हें चाहिए बस एक मैं
और एक नज़र बारिश की

मन के पाएँचे उठाकर
ख़्यालों के बाल बाँधकर
भीगती आँखें चुराती हूँ
तभी तबीयत जाती बिफ़र बारिश की

आज-कल

आज के लिए जूते कस लिए हैं
पर कल क्या होगा
वो फिर मुँह फाड़े खड़ा हो जाएगा
भूखा प्यासा
आज जैकेट पहन ली
धुँध है बाहर
पर कल सर्दी होगी या नहीं
उसका फ़र्क़ पड़ेगा क्या
चलो शायद कल भी
आज की थकान में निकल जाए
आज की स्मृतियों में उलझ जाए
फिर परसों सामने बैठ जाएगा
मुँह लटकाकर
मन है कि आज जैसे-तैसे बीत जाए
और कल कभी आए ही नहीं
दोनों के बीच लम्बी रात भी ना हो
कमरा बस बिस्तर में सिमट जाए
और दुनिया कमरे में
न आज की मृत्यु हो
न कल पैदा हो

और न ही कर्ताभाव की नौकरी का सृजन
मैं समय में से ऐसे गुज़र जाऊँ
जैसे बिना गाँठ के सुई में से धागा
न कहीं जाना पड़े
और न ही वापिस आना पड़े
न उठना पड़े और न सोना
न उजाला हो न अँधेरा
कुछ ना हो कहीं भी
मैं ख़ुद भी नहीं

तुम्हारा आना

तुम आते हो भगवान की तरह
कृष्ण की तरह
जब इंद्रप्रस्थ छिन जाए
जब चीर-हरण हो जाए

राम की तरह
जब आस अहिल्या हो जाए
और प्रेम अग्नि-परीक्षा
तुम्हें साथ नहीं चाहिए
और मुझे पूजा नहीं

तुम आते हो
इस्तीफ़े के बाद तरक़्क़ी की तरह
ख़ाली मेज़ पर
मरने के बाद दवा की तरह
ना जीने के लिए पैसे चाहिए
ना पैसों के लिए जीना

तुम आते हो
घर से निकल जाने के बाद संदेश जैसे
फिजूल से

दिख जाने के उपरांत वेश जैसे
बेमतलब से

तुम हाथ थामते हो
सदा शिथिल हो जाने पर
तुम मुड़कर देखते हो
सदा मेरे मुड़ जाने पर

बाक़ी सब तो ठीक है
पर ऐसा आना मुश्किल है
निवेदन है न आया करो

दरअसल तुम तब आते हो
जब आ सको
जब तुम्हारा और कुछ होता नहीं
और मेरा कुछ रहता नहीं

हम

मिलना
रातों से सुबहों का
सुबहों से आशाओं का
आशाओं से व्यथाओं का
व्यथाओं से साहस का
और मुझसे तुम्हारा

वादा
ज़ुल्म से ग़दर का
ग़दर से बिजलियों का
बिजलियों से बारिश का
बारिश से फूलों का
मेरे मन से तुम्हारा

इन्तज़ार
गरमी को सावन का
सावन को पतझड़ का
पतझड़ को सर्दी का
सर्दी को सूरज का
और मुझे हमारा

तुम्हारे नाम

उन सभी रंगों के नाम
जिनके नाम नहीं होते
उन सभी रोशनियों के नाम
जो जल जाने के बाद होती हैं
उन सब रातों के नाम
जिनसे नींद नदारद होती है
उन सभी शुभकामनाओं के नाम
जो तकल्लुफ़ का बोझ उठा रही होती हैं
उस सुंदरता के नाम
जिसके मानी निरंतर परिवर्तन में होते हैं
उन सभी प्यार से ली गयी तस्वीरों के नाम
जिनमें आँखों का असल रंग नज़र आता है
उन सभी परछाईंनुमा चीज़ों के नाम
जिनका असल न होना ही सुखद होता है

घर

जब घर बनाया जाएगा
सुदूर ऊँची पहाड़ी पर
नितांत अकेला
जिसकी खिड़कियाँ खुलेंगी
चीख़ती हुई आँधियों को अंदर लाने के लिये
और जिसके दरवाज़े बारिशों का झगड़ा सुनाएँगे
ख़ुशबू और धूल कंधे रगड़ते
एक-दूसरे को रोशनदानों से अंदर धकेलेंगे
हर एक खिड़की, दरवाज़ा और रोशनदान
अलग-अलग शोर मचाएँगे
सूरज सारा दिन उसकी दीवारें जलाएगा
और चाँद सारी रात मरहम लगाएगा
जब पेड़ों के सूखे पत्ते बरामदे में नाचेंगे
जब पीछे के लॉन में
पक्षी बहस करते हुए पानी पियेंगे
जब टूटते तारों को
नए सिरे से जोड़ के छत बनाई जाएगी
और बिजलियों के तमाशे के लिये
बैठक का लकड़ी का फ़र्श बिछाया जाएगा
जब बाहर अंदर हो जाएगा

और अंदर बाहर आ जाएगा
जब ऐसा घर बनाया जाएगा
तब उस घर के शोर में
मैं चैन से सो पाऊँगी

सच

सत्य और सौंदर्य के अटूट रिश्ते में लगी है सेंध
बह गया है स्वतंत्रता और आधिपत्य के बीच का पुल
कर्त्तव्य और साधना के मानी बैंक लॉकर में बंद हैं
आस अपनी चोटों से नहीं उभरेगी
ऊंची पहाड़ी से धकेला गया था उसे
प्रेम और भक्ति अपना भेस बदल कर सड़क पर घूम रहीं हैं
प्रथाओं और गाथाओं की चक्रनेमी धुरी से उतर गयी है
अभिव्यक्ति को हाशिये के सघन जंगल में छोड़ दिया गया है
ऐसे में अगर लिखना चाहते हो कवि
तो सुन्दर न लिखो
ऐसे में सच लिखो
सच जो विकराल है
सच जो भयावह है
सच जो आपदा है
सच जो भूखा, नंगा, आहत है
सच जो यथार्थ के स्तम्भ पर खड़ा है
कवि चाहे कटाक्ष कहो
या सच की खिल्ली उड़ाओ
पिछले सच से उबरने का सच भी चाहे सच है
ऐसे में कवि ढांढस न बंधाओ
अबकी बार कवि दिल न बहलाओ

गुज़रने दो इस सच से मानव को
निराशाग्रस्त हुए
गुज़रने दो हौंसला पस्त हुए
गुज़रने दो मानव को
इस त्रासदी से त्रस्त हुए

अपंग

हमारे बारे में सोचते हुए
हम दोनों की भावुक अयोग्यताएँ न देखो
न सोचो कि हमें
योग वाला गणित नहीं आता
और न ही विचारो
कि आस हमें अधूरा सा
कर जाती है

हमें सोचते हुए
बात करो नभ के तारों से
जो छिटके हुए भी
एक ही आकाश में हैं
कल्पना करो
पैरलल यूनिवर्स में
हमारी ही जैसी एक कहानी की

याद करो उन रंगों को
जो सुनाई देते हैं
सलाह लो
धीमी आवाज़ में बोलती
चमकीली रोशनी की

ध्यान करो
समयबोध के दूभर होने का
सब कुछ याद रहने
और सब कुछ भूल जाने
की कुंठा का
निराधार होने की सहजता का

और उदाहरण लो
तीन भाषाओं में
मूक होने की उपलब्धि का
हमारा प्रेम अपंग है
इसकी नियति
शायद चलना नहीं
उड़ना है...

बसंत के सूर्यास्त

बसंत के सूर्यास्त
तुम्हें कितना प्रेम मिलता है
बसंत के जितना बहुत सारा
बसंत के जैसा अल्पकालीन
या बसंत के सूर्योदय जैसा बिलकुल नहीं
जिसे प्रेम की रात को तरजीह देती दुनिया
देखती तक नहीं

कलरब्लाइंड

ये क्या है?
तुम्हारा मज़हब
इसका क्या करना है?
इसकी रक्षा करनी है
कैसे?
दूसरों से लड़कर
दूसरे कौन?
दूसरे रंग वाले
मेरा रंग क्या है?
जो तुम्हारी भीड़ का है
इस भीड़ का रंग क्या है?
उस भीड़ से अलहदा
उस भीड़ को क्या दिखता है?
इस भीड़ का अलग रंग
बीच में उन दो लोगों का रंग क्या है?
अंधेरा है, उनका रंग नहीं दिखता
भीड़ में रंग नहीं दिखता क्या?
नहीं, भीड़ को रंग नहीं दिखता
इन्सान भी नहीं
चलो, उठाओ लाठी!

दलीलें

कच्चे पक्के मौसम में
तुम्हारी प्रखर योग्यता की
पेचीदा सी पक्की दलीलें
बारिश का पानी भर जाने पर
बड़ी कॉलोनी के
सामने फैले गैटो की
संकरी गलियों जैसी
लगती हैं मुझे

न पड़ाव न ही मोड़
सिर्फ़ टखनों तक भरा पानी
ईंटों, कबाड़ और मिट्टी के ढूहों
से बने पुल
शहर का धुँधलका और
एक–दूसरे में घुलते हुए रास्ते
जिन पर मैं रेंगती खपती
चली जाती हूँ पर
न सिरा मिलता है न ही पता
बारिशें शायद इसलिए होती हैं
ताकि शहरों और शहरियों को
पानी के पर्दे के पार से
देखा जा सके

समानांतर ब्रम्हाण्ड

पैरलल यूनिवर्स ढूंढते
गॉड पार्टिकल की खोज करते
इन्टर्गेलेक्टिक यात्रा प्लान करते
कल्पनाओं में मैट्रिक्स और स्टार वार्स बनाते

अशोक हो जाते
ध्यानस्थ
संग्राम में या विराम में
अकेलेपन को ढाँपते
कन्ट्रोल कर के रखते
पुरुषों को
देखना चाहिए स्त्रियों की ओर

रोज़मर्रा की व्यक्तिगत राजनीति
के साथ इंतज़ार के
समानांतर ब्रम्हाण्ड में विचरती स्त्रियाँ
प्रेमिका से पत्नी
पत्नी से माँ
माँ से प्रेमिका
और प्रेमिका से फिर औरत हो जाने की
बाट जोहती स्त्रियाँ

इंतज़ार की मिसाल होतीं स्त्रियाँ
उसके होने में
जो जा चुका है
पर जिसे नहीं जाना चाहिए था

प्रतीक्षारत स्त्रियाँ
इंतज़ार की सारी कहानियाँ
पकते बालों में गूंथती स्त्रियाँ
सफ़ेद बालों को संवार कर रखती स्त्रियाँ

युद्ध शायद ऐसे ही जीते जाते हैं
पैरलल जीवन जीते हुए
नॉर्मल लगते रहना
कहीं रॉकेट भेजने की जरूरत नहीं

तुम्हारी वाली चाय

पता है
तुम्हारी वाली चाय बनानी सीख ली है मैंने
हल्की वाली चाय
दूधिया शरबत नहीं
चाय वाली चाय
पूरी और आधी पत्तियों को
एक बाय चार मिलाकर
रंग और खुश्बू के बैलेंस वाली चाय
उबलने के बाद
पूरे एक मिनट तक ढक कर रखने वाली चाय

अदरक और मसाले
बुरे स्किल को ढकने का प्रयास हैं
तो मसालों की सजावटों के बग़ैर वाली चाय
मिल्क पाउडर भगौने में नहीं
कप में ही डालती हूँ
दूध से न कटे हुए स्वाद वाली चाय

चीनी तुमने कभी रखी नहीं
और मुझे पसंद नहीं
सो बिना मीठे वाली चाय

आधे कप से आधी ज़्यादा वाली चाय
अच्छी ही बना लेती हूँ
पर चाय से अभी तक
कॉफ़ी वाला प्रेम नहीं हुआ

प्रेम का ट्रांसफ़र नहीं होता न
वो बस होता है
कॉफ़ी के नोट्स जैसा
उसे बनाया नहीं जा सकता
उस तक आपको बस पहुँचना होता है
तो एक बनानी आती है
और एक पीनी आती है
बस मोहब्बत और इश्क वाला फ़र्क़ है

एरर 404

रात के तीसरे पहर
सभी तारे घुल कर
अदृश्य गैस हो जाते हैं
मेरे नाम का तारा भी
बूँद नहीं होता

यात्रा वृत्तांत लिखने वाले
न यात्री होते हैं
न लेखक

कविता संकलनों में
संकलित सिर्फ़ कवि परिचय है

सुबह की ठंड का नाम
रिज़ा होना चाहिए

बस भूख को
दर्द कहना चाहिए
रद्द होना चाहिए
क्रियाओं का संज्ञा होना

शब्दकोश में सभी
नाम ग़लत हैं
एक तुम्हारे अनन्य
नाम के सिवाय
मैं सब सम्पादित करती रहती हूँ
कहीं भी तुम्हारा
नाम उकेर कर

थोड़ा अर्जेंट है

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा धीरे चलो
बहुत दूर पहुँचना है
सूरज ढलने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा ठहर जाओ
ये क़ाग़ज के जहाज़ बनाने हैं
औरों के आने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा आराम से बोलो
बहुत सारी बातें सुननी हैं
तुम्हारे माथे की लकीरें मिटने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा धीरे चाय पियो
साथ में बहुत कुछ चबाना है
बारिश ख़त्म होने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा तसल्ली से बैठो
रात में सब कुछ समेटना है
सुबह काम पे जाने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा देर से सोना
बहुत सपने सुलाने हैं
सुबह उठने से पहले

थोड़ा अर्जेंट है
ज़रा दूर खड़े रहो
ये स्पेस मापना है
यहाँ कुछ लिखने से पहले

ज़िद

ज़िद्दी सोमवार
ज़िद्दी माइग्रेन
ज़िद्दी तूफान
अक्टूबर की
काली रात की
सफ़ेद होने की ज़िद

मेरे साथ ही
इन सबकी ज़िद चलती है
आइ ईट स्पाइट फ़ोर ब्रेकफ़स्ट
और बीज, गुठलियाँ सब
मिट्टी में दबा देती हूँ

मूसलाधार जीवन
और मुसलसल ज़िदें
वहाँ चलतीं हैं
जहाँ इनसे भय न हो
निर्भयता थकाने वाला काम है
थकावट में भी
निर्भयता की ज़िद

प्रेम, विवाह न करने वाली लड़कियाँ

सब की सब कविताएँ नहीं लिखतीं
ऑर्गेनिक कॉफ़ी नहीं पीतीं
हमेशा आर्ट गैलरी में नहीं मिलतीं
अचानक ही देश-विदेश की यात्रा पर नहीं निकल जातीं
हमेशा वीकेंड प्रेमियों की तलाश में नहीं होतीं
सिर्फ़ पेड़ों, फूलों, सूर्यास्त की तस्वीरें नहीं लेतीं
स्याह काजल और चाँदी की नथुनी नहीं पहनतीं

न टूटे दिल और न ही मज़बूत इरादे रखती हैं
रूढ़ियों के विरुद्ध उदाहरण नहीं होना चाहतीं
योग और ध्यान करने के फ़ालतू घंटे नहीं रखतीं
मुक्त नहीं होतीं परिवार की परेशानियों से

फ़िगर मेंटेन नहीं करतीं
मेंटेन करती हैं सुबह काम पर जाने से पहले
दिन भर शुभचिंतकों से आने वाले
अजीब सवालों पर आने वाली
हंसी और गुस्से के वेग को
बोर्ड मीटिंग्स के दस्तावेज़ों से जूझती
और अपने टैक्सेज भरती हुईं

वे सब पहाड़ों में एक छोटा-सा कैफ़े नहीं खोलना चाहतीं
बल्कि चाहती हैं शहर के कैफ़ेज़ को
अकेले लोगों की आदत लगाना
आदत डालना चाहती हैं वहाँ आने वालों को
उनकी एक्स्ट्रा कुर्सी न माँगने की
कि वो एक फ़ालतू कुर्सी पर हक़ रखती हैं
और डिज़र्व करतीं हैं खिड़की के पास वाली
बेस्ट टेबल शनिवार शाम को

पहाड़ी खेल

1.

वो तीखी ढलान पर
गेंद को ऊपर ढकेलता है
छोटे-छोटे पैरों के बीच से
गेंद खिसकती रहती है
रंग-बिरंगी गेंद
सूरज की रोशनी में चमकती है
और उसके पैरों को
धोखा देती रहती है
वो धकेलता रहता है
और गेंद लुढ़कती रहती है
वो आज शाम बस यही करेगा
और उसकी माँ उसे
कुछ समय में पुकार लेगी

2.

लाल स्कार्फ़ वाली लड़की
गोल-मटोल सफेद पत्थर
सनोबर के तने पर मारती है
ढीली पैंट वाला लड़का दूसरा पत्थर
उसी निशान पर मरता है

लम्बे कद के लड़के का पत्थर
निशान से दूर लगता है
एक पत्ती पर
तीनों धूप सिर पर आने तक
सबसे ऊँचा निशाना
लगाने की कोशिश करते रहते हैं
पेड़ के तने पर
पोल्का डॉट्स का
पैटर्न बनाते हुए

3.
लकड़ी का गट्ठर पीठ
पर लादे हुए
तीनों निचली पगडंडी पर
भागते रहते हैं
जिसे भी एक और
अच्छी लकड़ी मिलती है
वो रेस छोड़ के
लकड़ियाँ बीनता है
गट्ठर में खोंसता है
और फिर भागता है
रेस उसके लिए रुकी रहती है
तीनों छोटे-छोटे पैरों से
ऊपर जाती सड़क पर
रुकते-भागते रहते हैं
अँधेरा होने तक ये रेस
चलती रहेगी
अँधेरा होते ही ये तीनों
एक साथ घर पहुँच जाएँगे

4.

बीस गिठ जगह नाप कर
लकड़ियाँ बीनते हैं
गत्ते, टहनियाँ इकठ्ठा करते हैं
अपनी-अपनी जगह पर
तीनों पैरों-भार बैठ जाते हैं
लकड़ियाँ मिट्टी में खोंसने लगते हैं
लड़की अपनी फ्रॉक का सिरा
टांगों में दबाती है
तीनों छोटे-छोटे हाथों के जोड़े
चार-चार लकड़ियाँ जमीन में
खोंस देते हैं
पत्थर से ठोक कर
चार खम्बों पर गत्ते की छत
स्लेट के पत्थरों से रोक दी जाती है
तीन छोटे छोटे घर
यूँ ही सारी शाम इंतज़ार करेंगे
जब तक बड़े लोग आ कर
वो लकड़ियाँ घर न ले जाएँ

5.

टीन की छतों पर
एक बन्दर परिवार घूम रहा है
नीचे वालों से खाना चुराने की आस में
उछल-कूद हो रही है
हरी ऊन की टोपी वाला लड़का
छोटे बन्दर के साथ
इधर से उधर कूद रहा है
मादा बन्दर अचानक
दांत दिखती है

और लड़का सहम के
कुछ कदम पीछे हो जाता है
लाल स्वेटर वाली लड़की
और नीले स्वेटर वाला लड़का
अपने साथी को कम पड़ता देख
चिल्लाते हुए आते हैं
अब तीनों शोर मचाते हुए
बंदरों के कदम से कदम मिलाते हुए
इधर से उधर कूदने लगते हैं
बड़े लोगों के खाने को
बन्दर अटैक से बचाते हुए

6.

शाम का पहला तारा
पेड़ों की टहनियों के बीच
आकर अटक जाता है
वो आसमांन में एक ख़ाना बनाता है
धीरे-धीरे उसके
ख़ाने में और सितारे
उग आते हैं
नाक पोंछते हुए
पेड़ के नीचे बैठे तीनों
एक-एक ख़ाने के तारे गिनते हैं
पाँच, दो, एक
सबसे ज़्यादा तारों वाला ख़ाना
ढूंढने का कम्पटीशन होता है
हरी टोपी वाले लड़के को
दस तारों वाला
ख़ाना मिल जाता है
माँ खाने के लिए बुला रही है
अब किसी को तारे नहीं गिनने

सोलो ट्रिप पर जाती सखी

जाना तुम सुदूर छोटे से गाँव
जँगलों नदियों पहाड़ों में फिरना
अनार के पेड़ से तोड़ कर
पत्तों को सूंघना
रात को बिजली कट जाने पर
तारों के नक़्शे बनाना
बारिश की आवाज़ के नीचे सोना
जानवरों की आवाज़ों का भय रखना
इंतज़ार करना साँस रोक कर
सुबह होने का

झुंझलाना मेघ-आच्छादित आकाश पर
सूरज के नदारद होने पर
सिर्फ़ चाय और घर से लाए अखरोट पर दिन गुज़ार देना
पास की झोंपड़ी की रसोई में जाना
सेक माँगना वहाँ की औरत से
और उसकी आग पर अपनी जैकेट सुखाना

या जाना तुम दूसरी भाषा बोलने वाले
बड़े से क्रूर शहर में
जहाँ सड़क पार करना झुंड के साथ

और दूसरी ओर अकेले खड़े होकर
मैप में म्यूज़ीयम वाली सड़क ढूँढना
सब्वे रेल के डिब्बे के कोने में बैठी
रोती औरत के पास जाकर चुपचाप बैठ जाना
पानी या शब्दों से प्रयास मत करना
औरतें समझ जाती हैं एक-दूसरे को
भाषा के बिना ही

डरना सुनसान गली में शाम को
डर और बटुए को खोंसकर अंदर की जेब में रखना
पुरानी किताबों की दुकान पर
कॉफ़ी पीना धीरे-धीरे
शराब पीकर होटल का रास्ता भूल जाना
कॉफ़ी बनाने वाली लड़की से पूछना
अगर वो तुम्हारे साथ चल सकती है होटल तक
उसकी शिफ़्ट ख़त्म होने के बाद

या जाना तुम समंदर किनारे छोटे से टापू पर
अगर तैरना न भी आता हो तो भी
कूद जाना समंदर के भीतर
मछलियों को दाना देने के लिए
अपने इन्स्ट्रक्टर का हाथ ना छोड़ना
या छोड़ भी देना कुछ समय बाद
गहराई से घबराना बहुत घबराना

स्कूटर किराए पर ले कर
बाज़ार की गेड़ी लगाने निकल जाना शाम को
वापस आते हुए अंधाधुंध बारिश में
एक पुल पर फँस जाओगी शायद
दो लड़कों की मोटरसाइकिल पीछे लग जाएँगी

तो टोल टैक्स वाले बूथ में
बैठी महिला से बतियाना कुछ देर
जब तक वो लड़के बोर हो कर चले न जाएँ

रुक जाना सड़क के किनारे
गिनना फ़र्श के इर्द-गिर्द कितने पैबल्ज़ लगे हैं
गहराइयों ऊँचाइयों का अनुमान लगाना
सब लोगों के दांत ख़राब क्यूँ हैं
बच्चों उदास चेहरे उदास क्यूँ हैं
फल वाले से पूछना कि उसने क्या-क्या चखा है

बातें करना, बिलकुल चुप रहना,
ठहराना, चलना और ज़्यादा ठहराना,
ख़ूब खाना, ख़ूब सोना
टूरिस्ट बनना या ट्रैव्लर बनना
सूर्योदय, सूर्यास्त देखना
डरना, ख़ूब डरना
साहस में कोई यश नहीं
धरती के ओर छोर सब नाप डालना
सब करना मेरी सोलो ट्रिप पर जाती हुई सखी पर
अकेले जाने और अकेले रहने का फ़र्क़
ख़ुद ही करना

लिस्ट

फिर शाम को बनती है लिस्ट
सुबह करने के कामों की
जो आज शाम तक नहीं हो पाते
माइग्रेन ठीक करने का योगाभ्यास
कविता लिखना
सूर्यास्त देखना
बेहतर कॉफ़ी बनाना सीखना
तुम्हें फिर एक दफ़ा मैसेज करना
कभी उस लिस्ट में नहीं आते
तुम्हारी आज की लिस्ट में क्या-क्या है?

तो टोल टैक्स वाले बूथ में
बैठी महिला से बतियाना कुछ देर
जब तक वो लड़के बोर हो कर चले न जाएँ

रुक जाना सड़क के किनारे
गिनना फ़र्श के इर्द-गिर्द कितने पैबल्ज़ लगे हैं
गहराइयों ऊँचाइयों का अनुमान लगाना
सब लोगों के दांत ख़राब क्यूँ हैं
बच्चों उदास चेहरे उदास क्यूँ हैं
फल वाले से पूछना कि उसने क्या-क्या चखा है

बातें करना, बिलकुल चुप रहना,
ठहराना, चलना और ज़्यादा ठहराना,
ख़ूब खाना, ख़ूब सोना
टूरिस्ट बनना या ट्रैव्लर बनना
सूर्योदय, सूर्यास्त देखना
डरना, ख़ूब डरना
साहस में कोई यश नहीं
धरती के ओर छोर सब नाप डालना
सब करना मेरी सोलो ट्रिप पर जाती हुई सखी पर
अकेले जाने और अकेले रहने का फ़र्क़
ख़ुद ही करना

लिस्ट

फिर शाम को बनती है लिस्ट
सुबह करने के कामों की
जो आज शाम तक नहीं हो पाते
माइग्रेन ठीक करने का योगाभ्यास
कविता लिखना
सूर्यास्त देखना
बेहतर कॉफ़ी बनाना सीखना
तुम्हें फिर एक दफ़ा मैसेज करना
कभी उस लिस्ट में नहीं आते
तुम्हारी आज की लिस्ट में क्या-क्या है?

कम्प्रेशन

इस छोर के दूसरी ओर
जहाँ सभी गहराइयों का माप
बग़ैर डूबे मिल जाता है

मिल जाती है
हवा के पैरों की गति
किनारों को सहलाते पानी की
सर्दी और ग़र्मी की समझ लग जाती है
बिना छुए

सूर्यास्त के रंगों की
बिखरने की अवधि
का पता लग जाता है
बिना हाथ जलाए

जहाँ ऊँचाइयों के मीटर
सब दिखा देते हैं
जहाँ दूरियों की समझ
नज़दीकियों से ज़्यादा पैनी है

उस ओर जहाँ सब कुछ
माप लिया गया है
अर्थ की खोज में
ऐसे छोर पर पहुँचकर
समय को घड़ी सुइयों की
टिक टिक के बाहर
कैसे समझा जाए

हर एक टिक की अवधि
दूसरी टिक से कितनी अलहदा
रात का लम्बा हो जाना
ज़िंदगी का छोटा रह जाना
घंटों का फिसलते चले जाना

जब ये सारे गणित
सीख भी लूँगी
तब भी तुम्हारे आने
और चले जाने
के ज़माने
की पैमाईश कैसे हो सकेगी
कौन बूझ सका है
वक़्त के कम्प्रेस होने को
वक़्त के परे जा कर

प्रेम

कह दे तो तेरी माया बनूँ
चाहे तो तेरा वैराग
सुमिरे तो रागिनी हो जाऊँ
बिसरे, वियोगिनी अभाग

बोले तो हूँ देव संस्कृत
हो मूक तो अश्रुधार
देखे तो कामना रति की
समझे तो योग का सार

संग चलो मैं काल–चक्र अविराम
ठहरे तो तेरा परम–धाम
बूझे तेरी सम–दृष्टि हूँ
हो नित–शान्ति या जीवन–संग्राम

थामे तो शान्त–चित धरा
खेले तो कल–कल अप्सरा
छोड़े तो मरुस्थल निर्दयी
भूले तो मृत्यु की वरा

जाने मुझे
धारे मुझे
राखे कभी
हारे मुझे

शाकुन्तल विश्वास मैं
भागीरथ प्रयास मैं
केवल तेरी खिन्नता
केवल तेरी आस मैं

मैं स्वामिनी
मैं भोगिनी
हो रुष्ट तो
चिर-चिर रोगिनी

अपनी न मेरी वाणी
अपने न मुझमें प्राण
तेरी हूँ जड़-बुद्धि मैं
तेरी हूँ वीणा-ज्ञान

तेरे बिना
असहाय हूँ
तू शब्द
मैं अभिप्राय हूँ

जो हूँ मैं काव्य-ग्रन्थ
अक्षर-विहीन मैं रिक्त हूँ
मैं हूँ सही
पर अव्यक्त हूँ

तू आत्मन
मैं प्रकृति
निर्जीव हूँ
जो तुझसे हटी

ना वियोग का धर्म कोई
ना विरहणी की जात
प्रेम है आशय इसका
समर्पण इसकी साख

जीवन धनुष

समय की ललकार पर
संग्राम जीत-हार पर
कोटियों प्रहार पर
पहचानहीन द्वार पर
खड़ी रही, खड़ी रही

नितांत जो कही गयी
वो भावना मेरी खरी
स्पष्ट थी पर अनसुनी
उस क्षुब्ध सी पुकार पर
अड़ी रही, अड़ी रही

निर्जीव देह-प्राण तो
कभी चैतन्य निर्माण हो
भंग स्वप्न शूल से चली
मूक अश्रुधार पर
पड़ी रही, पड़ी रही

प्रचंड युद्धनाद में
आघात और प्रतिघात में
डोर सी बंधी हुई

खिंची रही तनी रही
लड़ी रही, लड़ी रही

औचित्य ढूँढती हुई
कसौटी पर धरी रही
ठंडी सी सांत्वना में मैं
झुलसी रही जली रही
जीवन धनुष की नोक पर
प्रत्यंचा सी चढ़ी रही...

विरह

तुम्हारी विरह,
प्यारी विरह,
कैसे करूँ शुक्रिया,
हत्यारी विरह

पुल

छोड़ दो अकेला मुझे मेरे नग़मों के साथ
इनका पुल बना के यादों की पटरी बनाऊँगी
तुम्हारे पास तुम्हारी रज़ामंदी के बग़ैर आऊँगी
बस, एक ही रास्ता और एक ही मंज़िल
एक ही राहगीर
एक ही दिशा में चल के सब दिशाओं में जाऊँगी
एक-एक सांस के छोटे कदम बनाकर
उस पार उतर जाऊँगी,
न टूटेगा ये, न बिखरेगा कभी
धड़कन के पक्के शब्दों से बांधा है
चाहो तो तुम भी सैर कर लेना
इस तरफ़ की बारिश और सर्दी भी देख जाना,
कितनी असल कल्पना है
तुम तो रहोगे ही उस सिरे पे
जब ख़ाली हो जाऊँगी तो चली आऊँगी
जब भर जाऊँगी तो दौड़ आऊँगी,
रहूँगी इसी पार फिर भी
एक घर उस पार भी बनाऊँगी

प्रतिकार

नहीं, मैं नहीं समझती
हर एक वजह, हर एक स्पष्टिकरण को
नहीं समझती समय की पुकार,
या किस्मत की मार को
नहीं जानती मैं कि जीवन की चक्रनेमी
ऊपर-नीचे होती है
ना ही समझ सकती हूँ
रिवाज़ों और लिहाज़ों को
ना पहचान सकी हूँ
साहस के तमगों को
नहीं जान सकी हूँ
बेवजह के आने-जाने,
या सपने से उठ जाने को,
और ना ही कभी समझ आया है
कि ऐसा ही तो होता आया है
बस चीख़ के ललकार नहीं देती,
चिल्ला कर ज़िद नहीं करती
और लड़-भिड़ नहीं पड़ती
लोगों, परिस्थितियों से
बस सिसककर, ठिठककर रह जाती हूँ
बंद दरवाज़ों में

ख़ुद से लड़ती हुई,
या रात के एकांत में
अनन्त कुण्ठाओं को ढोती हूँ
और आह को बरसने देती हूँ
क्यूँकि मैं नहीं समझती

अंधापन

दिखता है मुझे
वो विराट स्याह आकाश
आलिंगनबद्ध हुआ सम्पूर्ण सृष्टि पर
दिखता है वो
दूर तक फैला अथाह अंधकार
भृकुटी सी ताने उद्दंड उस धरा पर
दिखता है मुझे
रौद्र सा वो सूनापन
तांडव सा करता हठी मनोबल पर
दिखता है मुझे
वो नितांत अकेलापन
रुष्ट कृंदन करता अबोध उस व्यक्तित्व पर
दिखता है मुझे
ये सब कुछ तो
(परन्तु) बस आगे नहीं दिखता
आगे नहीं दिखता...

गुच्छा सा

गुच्छा सा पाया आज वहाँ पीछे कहीं
गुच्छा कुछ पुराने पन्नों का
कुछ बिखरे से वरके
कुछ स्याही के धब्बे
ज्यों उठाया तो झर-झर शब्द गिरने लगे
सम्भाला तो उन पर हाथ फिरने लगे
धूल उड़ाई तो शब्दावली सी दिखी
कुछ पक्तियाँ जो आकर मुझसे मिलीं
और सहसा ही बोलीं
पहचाना? तुम तो भूल ही गई
गुच्छा सा वो कविताओं का
कुछ व्यथाओं कुछ आशाओं का
उन विसर गईं गाथाओं का
भावनाओं, आवेगों की रचनाओं का
कांपते सिहरे से मन से
देखा एक-एक अक्षर को
उस दिवस, उस रैन, उस अवसर को
झट से कस के बंद कर दी पोटली वो
अब पता नहीं कहाँ प्रारम्भ
कहाँ ध्येय हो

गुज़रे बरस

गुज़रे बरस वो जाने कैसा बरसा
के दीवारों से बौछारों के छींटें नहीं जाते
घूमने गरजने आया था परसों भी,
बस, बरसात के ठिकाने यहाँ नहीं बनाते
कहीं और का भीगता धुलता है फ़र्श आज-कल,
लेकिन वो सैलाब यहाँ के चहबच्चे नहीं बहाते
नमी की ठंडक और घुटन अंधेरे सी बाकी है अब,
पर सुनते है रौशनी के लिए जान नहीं जलाते
ना हो की कल को ज़मीन ही ना रहे कहीं,
बुझी आस के कदम खिड़की तक नहीं आते

हार

नानी का घर
आँगन के कच्ची मिट्टी वाले भाग में
विशाल नीम वृक्ष
जिसकी छाँव में
पहली दफ़ा 2 लिखना सीखा था
एक सुबह हुई काट दिया गया

बच्चे कारण नहीं पूछते
और न ही उन्हें बताया जाता है
उसका मोटा तना
महीनों पड़ोस के
सभी बच्चों का 'सी-सॉ' बना रहा

नीम की जगह अमरूद ने ले ली
सबसे ऊपर की टहनी से तोड़े अमरूद खाने का
कम्पटीशन हुआ करता था
सब आने वालों को
चाय की बजाय
मिलता था अमरूद और काला नमक
उससे ऊँचा कोई और
वॉन्टेज पॉइंट भी नहीं था दूर तक

एक तूफ़ान की रात
वो भरभरा कर जड़ समेत
दरवाजे पर आ गिरा
कुछ देर पहले ही अँधेरे में मैंने
उसे झूलते हुए देखा था

हाथों से टहनियाँ तोड़ कर
निकलने के लिए सुरंग बनाते हुए
नानी ने दुखी होते हुए भी शुक्र मनाया
कि मुझ पर नहीं गिरा
सुबह लकड़हारा भरी टोकरी
और भरा मन दे कर
उसके सभी टुकड़े ले गया

रुई के पौधे लग गए
उस ज़मीन पर
और मोहल्ले के सभी मंदिरों के
दीयों का इंतज़ाम हो गया

अब पेड़ों पर चढ़ने से बढ़कर
फूलों को सूंघने की उम्र
आ गयी थी
रुई के इर्द-गिर्द चार रंगों के गुलाब
जब रुई के पौधों में भी
कीड़ा लग गया
तो नानी ने वहाँ कुछ नहीं बोया

कुछ ही हफ्तों में
सदाबहार के फूलों ने

सारी ज़मीन कब्ज़ा ली थी
नानी के जाने से पहले ही
सदाबहार का जंगल उग आया था
पूरी कच्ची मिट्टी पर

जंग से हम हारें या न हारें
थक जरूर जाते हैं
प्रकृति बस मनुष्य के
थक जाने का इंतज़ार कर रही है

आधी सिगरेट

उतरता दिन मेरी खिड़कियों से
मचाता शोर धीरे रिसते-रिसते
सरकता आगे से मेरे दरवाजे के
जो खुलता है बिना काबे के अंदाजे के

कहीं आज भी ये दिन
न बैठ जाये बातूनी शाम के साथ
कल ही की तरह
फिर से भूलकर के अपनी ज़ात

मेरे कुर्ते की महक को
दोनों घूरेंगे मिलकर
कनखियों से ताकेंगे दोनों
बदनामियों की बातें सिलकर

मेरा सादा-सा सफ़ेद कुर्ता बेचारा
जिस पर रह गया है कल सारे का सारा
रात को झाड़ा तो था कुर्ता उतारकर
पर छूट गयीं चंद चीज़ें इस पर
की थी मैंने कितनी ही मशक़्क़त
न शाम झड़ी
न बातें
न ही आधी सिगरेट

बामानी साल

नए साल की नयी सुबहें
जिन्हें नाज़ों से सँभाल बामानी बनाया जाएगा
बामानी साल बनाने को
और सब ठीक करने की आस में
सब बुरी पुरानी सुबहों से झगड़ लिया जाएगा
इस कोमल ताज़ी और उनींदी सुबह को लेकिन
तजुर्बा पुरानी सुबहों का ही चाहिए
इसलिए ये नया साल सुलहों का
सभी पुरानी सुबहों की नयी सुबहों से
सभी सुस्त शामों की आरामदेह रातों से
और इस नए साल में
पुराना साथ लेकर चलने से

अतुकान्त

दिल्ली, लखनऊ और मैनहैटन
पार्क का एक कोना पकड़कर बैठ गए हैं
न्यू नॉर्मल से तुक मिलाने की कोशिश में
एक दिन सब कुछ ठीक हो जायेगा
पर ये छंद नहीं
कोशिशों का काम ही नाक़ाम होना है
फिर नई कोशिशों की फ़िराक़ में
काम आता है ये अतुकान्त अनुभव
ऋषिकेश, बर्लिन और ह्यूस्टन
की तरह ठिठका हुआ
जिसे लापरवाही से औचित्य पहनाया जायेगा
और शैलियाँ नियुक्त की जाएँगी
सभी जगहों और मतलबों पर पहुँचने की चाह
निराधार कर जाती है
तुक मिलाना दरअसल कृत्रिमता है
अतुकान्त ऐसा भी बेतुका नहीं

साढ़े छह

आधा आधा पूरा निभाया
निष्ठुर ऋतु का
वसंत विषुव
जितनी रात उतना दिन
आधा अदब में
आधा तलब में

समयवाद

कमरे की चारों दीवारों पर
रोज़ परछाइयों से
समय लिख रहीं सूरज की किरणें
हर पहर
एक के बाद एक
सुनहरे लिबास बदलती दीवारें
समय के सिवा कुछ नहीं

अपने मेज़ पर
वक़्त से जूझता
मेरा मेरे बिम्बों से होता
निरंतर झगड़ा
इन्हें तारीख़ का गवाह ही
बनाना है बस
सच के सिवा कुछ नहीं

अभूतपूर्व संकट से
उबरने को
नेताओं की ऐतिहासिक घोषणाएँ
ताली, थाली, दिया, पुष्प वर्षाएँ
मुँह ढंककर चल रही

ज़रूरी लम्बी मीटिंग
हर पल रचे जा रहे
राहत के रिकॉर्ड
झूठ के सिवा कुछ नहीं

बाहर सड़क पर
जन्म देती, बोझा ढोती, मरती हुई माँएं
बस की खिड़की से
केले को लपकता भूखा बच्चा
हजारों मील दूर से
बाप को घर लाते
आत्मनिर्भरता के पैडल
क़िस्मत सरीखी उलटी चलतीं रेलें
अपना जीवन पीठ पर लादे
मरने की जगह तलाशते
पैरों से सडकों पर
इतिहास गोदते हुजूम
इन सबके लिए
भीड़ या भाड़ के सिवा कुछ नहीं

यादें

लकीरों के बावजूद,
तजुरबे के बरअक्स,
उम्र के मुकाबिल,
यादें...

देवदार

सच ये है कि जमे हुए तालाब की परिधि की
पगडंडी लेकर दूसरे छोर पहुँचा जाए
प्राकृतिक प्रतिक्रिया ये है कि
जमी बर्फ़ पर चलकर
धूप के टुकड़े से मिला जाए
प्रयास ये है कि स्थिरता के सघन जंगल में
आरामग़ाह ढूँढी जाए
परिणाम ये है कि ठोस पगडंडी और प्रतिक्रिया के
शॉर्ट-कट को अलग रखने वाली कल्पना की
नर्म मिट्टी एवं आस की धूप में ही
भावना बीज रोपे जाएँ व
उनसे बने दृढ़ देवदारों को सराहा जाए

आधे रास्ते

अधूरेपन की कशिश अजब है
जैसे आधी रात में
आधे चाँद की चाँदनी में
आधा खिला फूल
जैसे अधर में छूटी बात
जैसे उनींदी चुस्कियों वाली
आधा कप चाय
जैसे पूरा खा लेने के बाद
ज़बरदस्ती खिलाई आधी रोटी
जैसे आधा याद आ रहा पुराना गाना
जैसे ज़बान पर
आधे अक्षर वाले शब्द का ज़ायका
जैसे विभाषा
आधी बोली आधी भाषा
जैसे आधी सी धुन पे
अधूरा सा नाच
जैसे पहला हिचकिचाता
आधा आलिंगन
जैसे आधे सिर के दर्द में
अधखुली आँखें
जैसे आधे मन से की गयी हाँ

जैसे तलहटी के फूल
जैसे तलहटी
न पहाड़, न मैदान
जैसे तलहटी में चढ़ती हुई पगडंडी
न सड़क, न चारागाह
बस, एक आधा रास्ता
और हर आधे रास्ते पहुँच कर
वापस लौट जाने की आधी सी ख़्वाहिश

हमेशा आधे रास्ते आकर
मन होता है वापस मुड़ जाने को
चीज़ें ख़त्म हो जाती हैं पूरी होकर
पर अब आधी उम्र सी
आधी पगडंडी पीछे छूट चुकी है
आज आधा सफ़र कर लिया है
और पूरे मन से अगले आधे में
पहला कदम रखा है
तुमसे आधे रास्ते मिलने की आस लिए

आज

मुझे आज के कामों से काम है.
मुझे आज की बातें करनी हैं
मैं गुज़रे को बहुत ही रोई हूँ
मुझे आज की यादें रखनी हैं
मेरा आज से ही वास्ता है
मेरी आज से ही लड़ाई है
मेरा आज ही से लेन-देन
मेरी आज की ही लगी बुझाई है
मुझे कल से बहुत डर लगता है
मुझे कल को सिरहाने नहीं रखना
मैं कल से कभी मिली ही नहीं
मुझे कल का बिस्तर नहीं ढंकना

मुझे आज का रास्ता दिख जाये
मुझे आज का पसीना गिनना है
मुझे आज की रोटी सेंकनी है
मुझे आज का बालन बीनना है

मुझे आज का पन्ना भरना है
मेरा कल का सफ़्हा जुड़ा ही नहीं
मेरा कल जो पिछले मोड़ पे है
मेरा कल मेरे संग मुड़ा ही नहीं

मैंने आज के बाल बना लिए
मैंने आज के फीते बाँध लिए
मैंने आज के अपने बस्ते में
मेरे आज के बटन टांक लिए

मुझे आज के संग ही चलना है
मुझे आज के रंग में ढलना है
मुझे आज ख़ून की स्याही करनी है
मुझे उसे सदियों में बदलना है

मेरा आज है जो मैं देखूँगी
मेरा आज है जो सब देखेंगे
मैं आज की भाषा बोलूँगी
मेरे आज को कल वे तोलेंगे

मैंने आज को कस के भींच लिया
मेरी परसों की दूरबीन टूट गयी
मेरे आज की हथेली पर लहू बिखरा
मेरे कल की क़िस्मत रूठ गयी

मैंने आज से बात कर रखी है
मेरा कल वो जब भी आएगा
मेरा कल अगर रूठा भी रहे
मेरा कल दरवाज़ा खुला ही पायेगा

मेरा आज दरवाज़े पे होगा खड़ा
मेरा आज कल को रोकेगा नहीं
मेरे कल का डर कभी लेकिन
मेरे आज को डर में झोंकेगा नहीं

शामों की पीड़ा

शामों की पीड़ा अलग होती है
दीवारों को लपक लेने वाली
शामों की छाया जैसी
इन्हें बनाने वाले दीपक
सहेजे कोनों से निकालकर
हम खुद ही जलाते हैं
तले के अंधेरे की ठंडक में
सिमटकर जलने को

ओरिगामी

दर्द की मशाल
जब दोनों कानों के बीच के आकाश
में बिजली चमकाती हुई
धड़कते हुए सितारों की कोशिकाओं
के साथ शान्ति का तांडव करती है
मुझे दिखती हूँ मैं
तह लगाती हुई
तुम्हारी यादों के क़ागज़ी जहाज़ों को
और एइफ्फ़ेल टॉवर से
उड़ाती हुई
नीचे सड़क की तरफ़
जहाँ चलते हुए
तुम्हारा हाथ मेरे हाथ में
एकदम सही बैठता था

सफ़ेद कमीज़

तो तुम्हारे लिए
बहार का महत्व
जमीन पर गिरे फूलों से होता है
बालकनी का महत्व
गोरैया से होता है
पुलों का महत्व होता है
खाइयों से
समय का महत्व
देरी हो जाने से
नमक का महत्व
आकर्षण से

क्या होता है तुम्हारे लिए
कहन का महत्व
सुन लेने वाले कानों से
गद्य का महत्व
उसके कवित्व से
अनुपस्थिति का महत्व
पिता से

और क्या होता है

रोटी का महत्व
उगाने वाले से
नाव का महत्व
उसमे कील ठोकने वाले हाथों से
हवा का महत्व
मशक़्क़त का पसीना सुखाने से
क़तार का महत्व
सबसे पीछे खड़े पाँवों से

कब होता है तुम्हारे लिए
विचार का महत्व
नज़रंदाज किए दुखों से
विचारधारा का महत्व
उसका बोझ ढोती पीठ से
मुख्यधारा का महत्व
हाशिये से

तुम्हारी सफ़ेद कमीज़
साफ़ रखने को
बहुत मैले हाथ लगे हैं
कब होगा तुम्हारे लिए
सफ़ेद कमीज़ का महत्व
उस पर लगे
उपेक्षित धब्बे से

सफाई

कुछ दुर्लभ किताबें डोनेट करने के बाद
अपने कितने क़लम
अपनी कविताओं की कई डायरियां
आज फेंक दी लेकिन
मुझसे नहीं फेंकी गयीं
माँ की मुझसे भी पुरानी साड़ियाँ
दादी के हाथ की बनी स्वैटरें
और नानी के हाथ गुंथी दरियाँ

पापा की दिलाई पहली घड़ी
जिसके साथ सारे इम्तिहान दिए
भाई का दिया
पहला कला कुर्ता
अभी तक रखे है
स्कूल के आख़िरी दिन क्लास्मेट्स की बनाई
मार्कर ग्राफ़िटी वाली कमीज़
रखी है संभाल कर
पीछे वाले शेल्फ़ पर

मिश्रा सर के नोट्स
संस्कृत का क्वेश्चन पेपर

सहेली का हस्तलिखित
कविता का आख़िरी पुर्ज़ा
दूसरा कॉम्पस
और पहले ट्रैकिंग बूट्स
सबकी जगह वही है

मुझसे अभी तक डिलीट नहीं हुए
चार प्रेमियों के मैसेज
दो के मूवी स्ट्रीमिंग पासवर्ड्स
और एक की काठ की माला की तस्वीरें

मिनिमल लिविंग वालों को
ये कैसे समझाएँ
कि किसी-किसी के लिए
सुकून होता है जमाख़ोर होना

क्यूँकि ख़ुद के मानी
रखने पड़ते हैं संजोकर
क्यूँकि मुझे बहुत ज़्यादा वक़्त लगता है
उलट-पलट कर देखने में
क्यूँकि लम्बी होती है चीज़ों कि उम्र
रिश्तों से, लोगों से, याद से
क्यूँकि सफाई बहुत ही निर्मम काम है

जब जब

जब जब सोचा
पहाड़, झरना
जंगल, नदी
समंदर, पेड़
तब तब
सोचा एकान्त

जब सोची
किताब, चाय
बालकनी, सूर्यास्त
बारिश, सिगरेट
कुर्सी, पर्दे
पीतल, मोज़ैक
अमृता शेरगिल, सत्यजीत रे
तब सोचा तुम्हें
ठीक एक कदम पीछे
मेरे कंधे के ऊपर गुज़रती
ठहरी नज़र से
सब देखते हुए।

खब्बा हाथ

अगर उल्लू सीधा करने के लिए उँगली टेढ़ी करनी पड़ती है
तो पहुँचने के लिए बार-बार रुकना पड़ता होगा
सुने जाने के लिए चुप रहना होता होगा
विश्वास जीतने के लिए झूठ बोलना पड़ता होगा
सामने चलने के लिए पीछे ध्यान रखना होता होगा
समझने के लिए सोचना बंद करना पड़ता होगा
सच लिखने के लिए बाएँ हाथ से लिखना पड़ता होगा
लेफ्ट विंग पर से उड़कर होती होगी क्रांति
हाँ, खब्बे हाथ की तर्जनी से माउस क्लिक करने वाले!
कौन से हाथ की उंगुलियों से किया था आख़िरी मैसेज?

अ वेंज़्डे

जागते हुए बाहोश
कैफ़ीनयुक्त दिन की
आवाज़ें, ज़रूरतें, तमीज़ और लिहाज़
जब तीसरे पहर तक भी
न संभलें

तब सारी सक्रियता
धीमी की जाती है
समेट लिए जाते हैं
सिमटती रोशनी के साथ
अधूरे रह गए अभियान
और दिन के शोर का बदला
रात की नींद से लिया जाता है
सुने जाते हैं सेकंड वाली सुई की
गश्त के टप्पे

क्यूँकि सुबहों को
आहिस्ता रहने की ट्रेनिंग
देनी पड़ती है
ख़्यालों में तअज्जुब का स्वाद
बरक़रार रखने को

श्वास निधि

वो कहते हैं
मनुष्य को श्वास
गिन कर मिलते हैं
जन्म की चीख़ में लगने वाले
खेलने, सीखने में खिंचने वाले
विद्रोह में लुटने वाले
घनिष्ठता में बीतने वाले
इंतज़ार में लगने वाले
क्रोध में रुकने वाले
विरह में चलने वाले
स्पर्श में महसूस होने वाले
सिगरेट के कश में क्षय होने वाले
व्यथा में लम्बे हो जाने वाले
वर्णन में छोटे हो जाने वाले
तफ़रीह में सदुपयोग होने वाले
सम्पूर्ण श्वास विनियोग
के गणित ने बताया
कि कॉफ़ी की ख़ुश्बू सूंघने में
खर्च हुए सांस
था संकुचित पूँजी का
सबसे सार्थक निवेश

दिवेआगार

सूर्योदय से सूर्यास्त तक
तुम्हारा पसारा सबसे बड़ा
बस मान भर लिया था

कभी लगता था कि
विविध ऊँचाइयों वाली नदियों से
कितने ही अलहदा होगे तुम
विशालता, चंचलता, गांभीर्य, रंग
और मोह लेने की शक्ति
सरिताओं की सी होगी तुम में
जो समेट लाती हैं
तुम्हारे पास
अपने सभी दुखों का नमक

रेतीले तट
पथरीली चट्टानें
कंकरी टापू
तुम्हारी लहरों के
घरों की इकाई
मापी थी सिर्फ़ मैप पर

एक उम्र गुज़रने के बाद
चित्रों, तस्वीरों से बाहर
पूरा दिन तुम्हारे साथ गुज़ारने पर
तुम्हारा चेहरा
सभी रंगों में देख
समझा तुम्हारा नमकीन आकर्षण
जो चढ़ गया था
फ़ारसी बोलने वाले निज़ामों
की ज़बान पर

सभी जहाज़ियों की
पिजिन, क्रिओल जुबानें
उग आयी हैं
तुम्हारे तटों पर लगे
नारियल के पेड़ों में
जिसे नाश्ते पर बुरक कर
रोज़ परोसती है
ठेठ भाषा बोलने वाली आज्जी

प्रिय समुद्र
तुमसे मिलने से पहले
कहाँ सोचा था
कि तुम सम्भाले बैठे हो
इतनी विशालता और इतनी सरलता
इतनी दिव्यता और इतनी सहजता
इतना माधुर्य और इतना नमक
भटकी कश्तियों के कंकालों का नमक
इतने कदमों का नमक
इतनी रूहों का नमक
शिलाओं पर जिंदा अदब का नमक

रोटी और कविता

माँ नहीं पूजती
पीपल पूनम पौष
उपवास और खरमास
से कोई लेना-देना नहीं उसे
माँ निवाती है सिर
सिर्फ़ उन्हीं क़िताबों के आगे
जिन्हें वह पढ़कर समझ सके
माँ नहीं कहती
केवल मातृभाषा को श्रेष्ठ
मातृभूमि की समझ से जूझती है

माँ ने नहीं गढ़ा कोई परिवेश
नहीं सिखाती एक सा वेश
माँ नहीं चाहती
खुद को सिद्ध करना
बच्चों की सफलताओं से
माँ ने नहीं बनाया हमें
बस कामयाब और विजयी

चाहे माँ ने हमेशा नहीं बचाया
प्रथाओं और रेखाओं से

माँ बन गयी
मेरे और रूढ़ियों के बीच
एक सीधा पुल
मेरे स्वतंत्र अन्वेषण
और विचरण के लिए

माँ सिर्फ़ सिखाती हैं
पूरे मन से हर काम करना
माँ नहीं लिखती कविता
वह पूरे मन से रोटी बनाती है
मैं लिखती हूँ कविताएँ
इस कोशिश में
कि ईमानदारी से गुँथी हों
पूरी कोशिश से बेली हों
और सब तरफ़ से
ठीक से पकी हों
कि कविताएँ हों
माँ की गोल, नरम, पर्फ़ेक्ट
रोटियों जैसीं

धुआँ

जीवित घर होते हैं वो मकान
जिनकी छतों पर तैरता है धुआँ
तो क्या इस लिहाज़ से
होने चाहिए जीवन से भरे
श्मशान

धू धू करती चिता से निकलती
बच्चों, पति और घर की चिंता
घुलती जाती है हवा में
और जा मिलती है
उसकी रसोई से निकलते धुएँ से
जहाँ उसकी बेटी
एक तरफ़ रख रही है
पिता और भाई के लिए बनायी
पहली कोशिश की जली रोटी
लूनदानी और खुली कॉपी के पास

तरसते शरीर को न सही
पर राख को दिया गया पानी
जब वे बीन रहे थे अस्थियाँ
मुझे शीशी में भर लेना चाहिए था

धुएँ का कुछ हिस्सा
गंगा में प्रवाहित करने को
तुम्हारी असल मुक्ति के लिए

पुराने जूते

पुराने जूतों पर
कितनी परतें धूल होगी
कितनी गलियों की

कितने दिनों की बारिश
कितनी रातों की आग
एक सी ही लगी होगी
एक जोड़े को

कितने कीचड़ के सूखे छींटें
कितने घरों की पायदानों के रोएँ
कितनी जुराबों से राबता
कितनी कमीज़ों से मेल
कितनी पतलूनों का स्पर्श
कितने बक्सों, बस्तों से दोस्ती
होगी इन दो कंकालों की

कितनी पॉलिश कितने ब्रश
मिटे होंगे इनके हुस्न पर
कितनी बार और कितनी तरह से
मरोड़े गए होंगे इनके तस्मों के कान

कितनी भाषाओं की तारीफ़
कितनी आँखों की नज़रें
लगी होंगी इन्हें
कितने कोनों में
कितने रंगों के अँधेरों में
फेंका, रखा, छोड़ा होगा
कितने बच्चे बड़े हो गए होंगे
इनके बूढ़े होने में
पर हमेशा उन दो पैरों
का सान्निध्य रहा होगा एक-सा

फिर इतने जवाबों के पीछे चलते
कैसे सवाल हैं ये
क्यूँ ख़त्म हो जाने की उम्र
हमेशा छोटी होती है
ख़त्म होते रहने से
क्यूँ कचोटता है
अलसुबह एक हाथ का अचानक
बाहर निहत्था छोड़ आना

जा-ए-मन

ज़रूरत है
एक सुरक्षित कॉलोनी की
सुरक्षित कॉलोनी में
रात भर जलती स्ट्रीट लाइट्स की
स्ट्रीट लाइट्स के पास
एक छोटे से कमरे की
नहीं नहीं! एक घर की

एक बालकनी वाले घर की
जिसमें खड़े होकर चाय पी जा सके
और की जा सके
पार्किंग करने वालों की आलोचना
ज़रूरत है बालकनी के सामने जंगल की
इस जंगल में हों
दस अलग प्रजातियों के पक्षी
पास रखी दूरबीन से देखने को
रोज़ाना पेड़ों के बीच घटते
लाल, नारंगी, गुलाबी सूर्यास्त
का दृश्य होना चाहिए

ज़रूरत है एक बड़ी रसोई की
जहाँ रोज खाना बनाने का बंधन न हो
और छोटे शयनकक्ष की
जिसमें गाया जा सके
एक फुल साइज़ आईने की
जिसमें की जाए हर सुबह
खुद के नार्मल होने की पड़ताल

ज़रूरत है दूसरी तरफ़
एक कोने में नीचे बिछी दरी की
जिस पर बैठ ध्यान लगाने की कोशिश की जाये
एक क़िताबों के शेल्फ़ की बगल में
ज़रूरत है एक कुर्सी मेज़ लैंप की तिकड़ी की

जिस मेज़ पर काम और पढ़ाई हो सके
हो सके चित्रकारी और रंगाई
की जा सके दिन की डायरी एंट्री
यहाँ से देखा जा सके
उस अकेले इंडोर पौधे को
दोस्तों के साथ बातें हो सके
और सहकर्मियों के साथ झगड़ा
इस मेज़ पर खाया जा सके
भूखा रहा जा सके
दिन में सुस्ताया जा सके
रात में जगा जा सके

यहाँ से डिलिवरी दरवाजे पर छोड़ने के
निर्देश दिए जा सकें
सीखा जा सके
फ्यूज़ ठीक करना

ड्रिल मशीन चलना
एक्सपेरिमेंट किया जा सके
तरह-तरह की रोशनियों से
किया जा सके
पर्वतारोहण के अपने सारे
औज़ारों का परीक्षण

यहाँ बन सकें सारी योजनाएँ
और टूट सकें सरे भ्रम
इस मेज़ पर व्याकुल रहा जा सके
ज़ोर-ज़ोर से हंसा जा सके
और ज़ार-ज़ार रोया जा सके
इस पर थका जा सके
सब कुछ खुद करने की ज़िद से
और डरा जा सके
अनिश्चित भविष्य से

इस मेज़ पर बैठकर
वयस्कों वाली फ़िक्र की जा सके
परिजनों के लिए
और बांटी जा सके
किशोरों वाली खीज
यहाँ उदास रहा जा सके
हाल के अहवाल पर
और उदासीन हुआ जा सके
हर चीज़ के प्रति

ऐसी मेज़ पर कोहनियाँ टिका कर
हाथ में कविता की किताब लिए
कुर्सी पर चौंकड़ी लगाए

शून्यता में घूरा जा सके
इस मेज़ के आस-पास और कोई न हो
इसकी झाड़ पोंछ करने को
इसकी कोई चीज़ अपनी जगह से न हिले

पिता के घर से पति के घर
जाने के बीच में
बनाया जा सके एक पड़ाव
ऑफ़ द वुमन, बाय द वुमन, फ़ॉर द वुमन
एक ख़ुदगर्ज़ी वाला घर

पर आप कहाँ बनाने देंगे
एक अकेली लड़की को
उसकी अपनी एक जगह

कवि

जब शब्द ज़्यादा बोलते हैं रेखाओं से
पीछे छूट जाते हैं पंक्तियों के बीच के शब्दांश
पृष्ठ हो जाते हैं अगाध शून्य
जब रिक्तता के स्वर ऊँचे हो जाते हैं
तब कवि शरण लेता है
हाशिए के बाहर
आकृतियों
कुटिल रेखाओं
फ़ोन नम्बरों
सूचियों
मानचित्रों
के साथ
सत्य को कुरेदता
आत्म के ड्राफ्ट की राह पर
वापस जाता हुआ
जहाँ नृत्यरत है सच्ची कला

बातें

कुछ ऐसी बातें होती हैं
कुछ यूँ ही यादें होती हैं
कुछ डूब उतर के जाती हैं
कुछ देखती ही रह जाती हैं
कुछ ख़ुद ही ख़ुद में खोती हैं
कुछ ऐसी बातें होती हैं

सांसों में चलती रहती हैं
कुछ चुप हैं तो कुछ कहती हैं
कुछ दम ही में अटक गईं
और ख़्याल की स्याही टपक गई
जो जी-जी कर जोती हैं
कुछ ऐसी बातें होती हैं

अनकही तो ख़ालिस ख़ुशबु है
कह दी तो बिखरा जादू है
कुछ आस में पलती रहती हैं
कुछ आह में जलती रहती हैं
कुछ बीज नए भी बोती हैं
कुछ ऐसी बातें होती हैं

बातें कुछ कह दी जाती हैं
काफ़ी पर रह ही जाती हैं
जब रातों से डर लगता है
और रातें साथी होती हैं
दिन भर तब ख़ुद से होती हैं
कुछ ऐसी बातें होती हैं

मुकरियाँ

1.

कनक छवि बिन आए न चैन
भरमे सकुचे वो दिन रैन
मोहे निहारे जाके नैन
अंग संग मोरे रहे जो नित ही
क्यूँ सखी साजन?
ना सखी सेल्फ़ी

2.

सुबह सवेरे गरवा लगावे
श्याम बरन तिसका मोहे भावे
कुछ कारज जा बिन न सुहावे
तिस बिन प्रेम मिले ना माफ़ी
का सखी साजन
ना सखी कॉफ़ी

3.

हंसी ठिठोली ठठ्ठा तिस बिन
घट मोरा नहीं घूँघट तुम तिन
कुमति निवारो सम्भाव से छिन-छिन
मति के पाट उघाड़ो प्रियतम

काहे सखी सजना?
ना सखी फेमिनिज़्म

4.

पाखर माही मति धरे
प्रेम या भूल ना ज्ञान पड़े
पर ना बोलत कबहुँ न डरे
पल्ले पड़त कनून न गोरमेंट
का सखी सजना
ना सखी कॉन्सेंट

स्वाति शर्मा के पास अपने आसपास को देखने के लिए चकित कर देने वाली नज़र है। स्वाति की कविताएँ पढ़ते हुए नई निगाह बहुत शिद्दत से महसूस होती है। स्वाति की कविताएँ आपका हाथ थामे किसी भीड़ से गुज़रती हैं और अचानक आपको शोर से बाहर ले जाकर खड़ा कर देती हैं। जहां आप अपने दिल की आवाज़ और नसों में दौड़ते रक्त को महसूस कर सकते हैं। ये कविताएँ कोलाहल के बीच मन के एकांत मे सेंध लगाती हैं। जब कभी वे इन कविताओं में बोलती हैं तो वह इतना निर्विकार होता है कि जैसे उनका कवि अपने-आप से कोई बातचीत कर रहा हो। एक ऐसा संवाद जिसमें उत्तर की प्रत्याशा नहीं है मगर उत्तर की प्रत्याशा के बिना कही गई बात और भी ज़्यादा मार्मिक होती है।

-दिनेश श्रीनेत (इकॉनोमिक टाइम्स से)

स्वाति की कविताओं से गुज़रने के बाद पाया कि एक विश्व से दूसरे विश्व की आवाजाही के मध्य उनकी क़लम में नए बिंबों में अपने भावों को उकेरने की व्यापक क्षमता है। उनकी कविताओं में जहाँ वैज्ञानिक शब्दों की ताज़ी बयार प्रभावित करती है तो कहीं ना कहीं एक द्वंद्व दृष्टिगोचर होता है। जो सही और ग़लत के मध्य है। अनिर्णय की स्थिति में छोड़ी गई कई कविताएँ पाठक के मन में प्रश्नों के बीज रोपती हैं। अधिकांश कविताओं में आज की युवा पीढ़ी के सहज जीवन का आख्यान है तो वक़्त के पार जाने की कवायद भी। नयें बिंबों, शिल्पगत प्रयोगों और दार्शनिक अंदाज़ के साथ काव्यधारा में कुछ अलहदा जोड़ने के प्रयास के लिए उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

-वंदना वाजपयी (कथाकार, कवयित्री)

राजधानी दिल्ली में जन्मी, पली, बढ़ी और अंग्रेजी, जर्मन, फ़ारसी तथा हिंदी-उर्दू में लिखने-पढ़ने वाली स्वाति मूलतः हिंदी की कवयित्री हैं। इन सभी भाषाओं से हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद करने वाली स्वाति ने कुछ समय साउथ एशिया बीट पर पत्रकारिता भी की है। अमेरिका जाकर फ्लोरिडा में नासा से सम्बंधित कंपनी में भी प्रबंधन का काम किया, लेकिन सृजनात्मक लेखन ज़्यादातर हिंदी में करती हैं। कविता के अलावा स्वाति निबंध और समीक्षा भी लिखतीं हैं। स्वाति का पहला कविता संग्रह 'सोलो ट्रिप पर जाती सखी' है। 'युवा सृजन शिखर सम्मान' से सम्मानित। सम्प्रतिः दिल्ली में कम्युनिकेशन्स मैनेजर।

9788181352071

भावना प्रकाशन